mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-05 अंक-23 पृष्ठ-8 मूल्य-3 रूपये

सतना
23 जनवरी 2025 गुरुवार

दैनिक मीडिया ऑडीटर

दैनिक मीडियाऑडीटर

सतना, रीवा से एक साथ प्रकाशित

टीम इंडिया की ...
@ पेज 7

संक्षिप्त समाचार

आयरलैंड में बड़ी राजनीतिक हलचल, खत्म हुआ सियासी संकट

डबलिन (एजेंसी)। आयरलैंड में बड़ी सियासी हलचल देखने को मिली है। सांसदों की ओर से गठबंधन सरकार के प्रमुख के रूप में औपचारिक रूप से मंजूरी प्रदान किए जाने के बाद बुधवार को माइकल मार्टिन दूसरी बार आयरलैंड के प्रधानमंत्री बनेंगे। चुनाव में मार्टिन की 'फियाना फेल' पार्टी ने सबसे अधिक सीटें

जीती थीं, लेकिन उसे इतनी सीट नहीं मिली थी कि वह अपने बलबूते सरकार बना सके। कई सप्ताह की बातचीत के बाद, लंबे समय से प्रभावी दक्षिणपंथी पार्टियां 'फियाना फेल' और 'फाइन गाएल' कई निर्दलीय सांसदों के समर्थन से गठबंधन बनाने पर सहमत हो गईं। समझौते के तहत, मार्टिन (64) तीन साल के लिए प्रधानमंत्री होंगे, जबकि 'फाइन गाएल' के साइमन हैरिस उपप्रधानमंत्री होंगे। इसके बाद दोनों नेता शेष दो वर्ष के कार्यकाल के लिए अपने-अपने पद बदलेंगे। दोनों दलों के सदस्यों ने सरकार के समझौते की पुष्टि कर दी है और अब संसद के निचले सदन 'डेल' के सदस्यों द्वारा मार्टिन के नाम की पुष्टि की जाएगी। इसके बाद राष्ट्रपति माइकल डी हिगिंस द्वारा उन्हें औपचारिक रूप से इस पद पर नियुक्त किया जाएगा। आयरलैंड में 29 नवंबर को हुए चुनाव में 'फियाना फेल' ने 174 सीट में से 48 और 'फाइन गाएल' ने 38 सीट पर जीत दर्ज की थी।

अमेरिका के 22 प्रांत बर्थ राइट सिटीजनशिप मुद्दे पर ट्रंप के खिलाफ

वाशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिका के 22 प्रांतों के अटॉर्नी जनरल ने राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के उस शासकीय आदेश के खिलाफ मुकदमा दायर किया है जिसके तहत देश में जन्म लेने पर किसी भी व्यक्ति को स्वतः नागरिकता मिल जाने के 100 साल पुराने आव्रजन नियम को खत्म करने के लिए कदम उठाया गया है।

इस नियम के तहत यदि किसी व्यक्ति का जन्म अमेरिका में हुआ है तो जन्म के आधार पर उसे अमेरिकी नागरिकता मिल जाती थी, भले ही उनके माता-पिता किसी और देश के हों। सोमवार को जारी ट्रंप का लगभग 700 शब्दों का कार्यकारी आदेश, राष्ट्रपति चुनाव अभियान के दौरान उनके द्वारा किए गए वादे को पूरा करना है। लेकिन, यह निश्चित नहीं है कि ट्रंप का यह कदम सफल होगा या नहीं, क्योंकि राष्ट्रपति की आव्रजन नीतियों और नागरिकता के संवैधानिक अधिकार पर कानूनी लड़ाई लंबी चलने वाली है। डेमोक्रेटिक अटॉर्नी जनरल और प्रवासियों के अधिकारों के पैरोकारों का कहना है कि जन्मजात नागरिकता को लेकर स्थापित कानून है और यद्यपि राष्ट्रपतियों के पास व्यापक अधिकार होते हैं, लेकिन वो राजा नहीं होते। न्यूजर्सी के अटॉर्नी जनरल मैट प्लैटकिन ने कहा कि राष्ट्रपति अपने आदेश के जरिए इस व्यवस्था को समाप्त नहीं कर सकते। व्हाइट हाउस (राष्ट्रपति निवास एवं कार्यालय) ने कहा कि वह अदालत में प्रांतों का सामना करने के लिए तैयार है और ये मुकदमे 'वामपंथियों के प्रतिरोध से ज्यादा कुछ नहीं' हैं। व्हाइट हाउस के उप प्रेस सचिव हैरिसन फील्ड्स ने कहा, ''कट्टरपंथी वामपंथी धारा के विपरीत जा सकते हैं और लोगों की प्रबल इच्छा को अस्वीकार करने का विकल्प चुन सकते हैं, या फिर वो राष्ट्रपति ट्रंप के साथ मिलकर काम कर सकते हैं।''

कोलकाता डॉक्टर रेप-हत्याकांड में संजय रॉय को मिले फांसी की सजा

उम्रकैद के खिलाफ हाईकोर्ट पहुंची सीबीआई

नई दिल्ली (एजेंसी)। कोलकाता के आरजी कर मेडिकल कॉलेज में ट्रेनी डॉक्टर संग हुए रेप और मर्डर मामले में बड़ा अपडेट आया है। सीबीआई ने दोषी संजय रॉय की निचली अदालत के फैसले के खिलाफ फांसी की सजा के लिए हाईकोर्ट में अपील है। कोलकाता की सियालदाह कोर्ट ने शनिवार को संजय रॉय को इस मामले में दोषी करार दिया था और सोमवार को संजय रॉय को उम्रकैद की सजा सुनाई थी। कोर्ट ने कहा था कि दोषी संजय रॉय को उसकी मौत होने तक जेल में ही रहना होगा। इसके अलावा उस पर 50 हजार रुपये का जुर्माना भी लगाया गया है। जज ने राय सरकार को पीड़िता के परिवार को 17 लाख रुपये बतौर मुआवजा देने का आदेश भी दिया है। बता दें कि कोलकाता

के आरजी कर मेडिकल कॉलेज-अस्पताल में 8 अगस्त की रात को ट्रेनी डॉक्टर से रेप और मर्डर के दोषी संजय रॉय को उम्रकैद (मरते दम तक जेल) की सजा सुनाई गई और 50 हजार का जुर्माना लगाया। सियालदह कोर्ट के जज अनिर्बान दास ने सोमवार, दोपहर 2.45 बजे सजा सुनाते हुए कहा, यह रेयरेस्ट ऑफ रेयर मामला नहीं है। मौत की सजा नहीं दी सकती। कोर्ट ने पश्चिम बंगाल सरकार को निर्देश दिया कि वह पीड़ित परिवार को 17 लाख रुपए मुआवजा दे। हालांकि परिवार ने इसे लेने से इनकार कर दिया। फैसला सुनाने से पहले दोपहर 12.30 बजे कोर्ट ने दोषी संजय, सीबीआई और पीड़ित परिवार की बातें सुनीं। संजय से कहा- यह बताया जा चुका है कि तुम किन अपराधों के दोषी हो।

चेन खींचने के बाद पटरी पर उतरे दूसरी ट्रेन के यात्रियों के ऊपर से ट्रेन गुजर गई

पुष्पक एक्सप्रेस में आग की अफवाह, ट्रेन से कूदे पैसेंजर्स, 11 यात्रियों की मौत

जलगांव (एजेंसी)। महाराष्ट्र से एक बड़ी खबर सामने आई है, पुष्पक एक्सप्रेस में आग लगने की अफवाह फैली जिससे कई यात्री ट्रेन से कूद गए, दूसरी तरफ से आ रही ट्रेन से कटकर अबतक 11 लोगों की मौत की खबर है। रेलवे के अधिकारी के मुताबिक महाराष्ट्र के जलगांव जिले में चेन खींचने के बाद पटरी पर उतरे दूसरी ट्रेन के यात्रियों के ऊपर से ट्रेन गुजर गई, जिससे कई यात्रियों की मौत हो गई। जलगांव से विधायक और महाराष्ट्र सरकार में मंत्री गिरीश महाजन ने जानकारी दी है कि हादसे के बाद अबतक 11 मृतकों के शव बरामद किए गए हैं। वहीं जानकारी के मुताबिक हादसे में 30 से अधिक लोग घायल बताए जा रहे हैं। यह ट्रेन रुकी हुई थी लोग बाहर थे। आग लगने की अफवाह के बीच यात्री ट्रेन से कूद गए और इस दौरान दूसरी ट्रेन की चपेट में आने से 8 यात्रियों की मौत हो गई। रेलवे के बड़े अधिकारी जलगांव रवाना हो गए हैं। जानकारी के मुताबिक ये ट्रेन लखनऊ छोटी लाईन से मुंबई जाती है।

पुष्पक एक्सप्रेस मुंबई की तरफ से भुसावल और पचौरा के बीच जा रही थी और घटना पराधाड़े गांव के पास की बताई जा रही है। कहा जा रहा है कि ट्रेन को कुछ वर्क के कारण कॉशन ऑर्डर मिले थे जिससे ट्रेन को रोकने के बाद ब्रेक मारने पर पहिए से चिंगारियां उठी और इस बीच ट्रेन में अफ़वाह फैली कि ट्रेन में आग लग गई है। यह सुनते ही कुछ लोगों ने ट्रेन से छलांग लगा दी। सामने दूसरी पटरी से कर्नाटक एक्सप्रेस आ रही थी और उसकी चपेट में क़रीब एक दर्जन लोग आ गये। बाक़ी अन्य यात्रियों ने भी छलांगें लगाई जिसमें 30 से 40 यात्री घायल हुए। उन्हें पास में ग्रामीण अस्पताल ले जाया गया है। पुष्पक ट्रेन हादसे पर सीएम योगी ने गहरा दुःख व्यक्त किया है और कहा है कि पुष्पक ट्रेन दुर्घटना अत्यंत दुःखद एवं हृदय विदारक है। सीएम योगी ने मृतकों के परिजनों के प्रति संवेदना की व्यक्त की और घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की।

केजरीवाल ने की मिडिल क्लास के लिए केंद्र सरकार से की 7 बड़ी मांग

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली में विधानसभा चुनाव की तारीख नजदीक है। ऐसे में सभी राजनीतिक दल को लुभाने में लगे हुए हैं। चुनाव प्रचार में समाज के हर वर्गों के लिए कुछ न कुछ लुभावने वादे किए जा रहे हैं। इस बीच बुधवार को आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित किया और देश के मिडिल क्लास को लेकर कई जरूरी मुद्दों पर बात की। केजरीवाल ने ऐलान करते हुए कहा कि वह और क्रमिडिल क्लास की आवाज बनेंगे। आज से दो हफ्ते बाद देश का बजट आने वाला है। उनके मुद्दे उठाए जाएंगे। केजरीवाल ने मांग की है कि देश का अगला बजट मिडिल क्लास के लिए हो। दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री और आम आदमी पार्टी के संयोजक अरविंद केजरीवाल ने कहा कि कई वादे धर्म और जाति के नाम पर किए जाते हैं। कई वादे समाज के निचले तबके के लिए किए जाते हैं। कई वादे उद्योगपतियों के लिए किए जाते है। कुछ लोग इनके वोट बैंक हैं।

भाजपा कार्यकर्ताओं से संवाद करेंगे पीएम नरेंद्र मोदी, चुनाव पर फोकस

दिल्ली के बूथ स्तर पर कार्यकर्ताओं से वीडियो संवाद करेंगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली में विधानसभा चुनाव होने वाले हैं। 5 फरवरी को मतदान किया जाएगा और 8 फरवरी को चुनाव के रिजल्ट जारी किए जाएंगे। इस बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आज दिल्ली के बूथ स्तर पर कार्यकर्ताओं से वीडियो संवाद करेंगे। इस कार्यक्रम को भाजपा ने मेरा बूथ सबसे मजबूत बूथ संवाद नाम दिया है। दिल्ली के सभी 256 मंडलों के लगभग सभी 13033 बूथों के कार्यकर्ता वीडियो कॉल के माध्यम से प्रधानमंत्री मोदी का संदेश सुनेंगे। पीएम मोदी अपने संवाद के बीच में अनेक कार्यकर्ताओं से भी बातचीत करेंगे। इस संवाद में दिल्ली के बड़े भाजपा नेता बैजयंत पांडा, डॉ. अल्का गुर्जर, अतुल गर्ग भी शामिल होंगे। बता दें कि दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा के अलावा सभी सांसद, विधायक, पार्षद, प्रदेश, जिला एवं मंडल संगठन पदाधिकारी, बूथ प्रमुख, पन्ना प्रमुख भी इस कार्यक्रम से जुड़ेंगे। वहीं एनडीए के सभी 70 विधानसभा प्रत्याशी एवं प्रधानमंत्री के मन की बात कार्यक्रम की टीम के सदस्य भी मेरा बूथ सबसे मजबूत संवाद से जुड़ेंगे।

पीएम मोदी ने इस संवाद कार्यक्रम में कहा कि मुझे पक्का विश्वास है कि दिल्ली में संगठन की जो ताकत है, हर बूथ पर तीन-तीन चार-चार पीढ़ी के कार्यकर्ता हैं। यही शक्ति इस बार विधानसभा चुनाव में भी

भाजपा को प्रचंड जीत दिलाएगी। अपने अपने बूथ पर आप जो मेहनत कर रहे हैं, उसके चलते आप भारी विजय प्राप्त करने ही वाले हैं। लेकिन एक साथीदार के नाते, दिल्ली भाजपा के कार्यकर्ताओं की तरफ देश देख रहा है। पूरा देश आपसे सीख रहा है। क्या इस चुनाव में विजय काफी नहीं है। हर बूथ दो लक्ष्य तय कर सकता है। एक मतदान के पुराने सारे रिकॉर्ड तोड़ेंगे। पिछले 10 साल में जितना मतदान हुआ है, उससे यादा मतदान हमारे बूथ में होगा। दूसरी बात कि मामूली विजय नहीं, हर बूथ पर भाजपा को 50 फीसदी से वोट यादा कैसे मिले, इसके लिए बूथ में रहने वाले हर नागरिकों का दिल जीतना है।

JDU का मणिपुर में समर्थन रहेगा जारी

जदयू के राष्ट्रीय प्रवक्ता राजीव रंजन ने कहा

मणिपुर (एजेंसी)। मणिपुर के जदयू प्रदेश अध्यक्ष ने एक लेटर जारी कर सियासी सनसनी मचा दी, जिसमें कहा गया था कि नीतीश कुमार के नेतृत्व वाली जनता दल (यूनाइटेड) ने मणिपुर में एन बीरेन सिंह के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार से अपना समर्थन वापस ले लिया है। इसके थोड़ी देर बाद जदयू ने ऑफिशियल बयान जारी कर कहा कि ये भ्रम फैलाया गया, जदयू के प्रदेश अध्यक्ष को पद से हटा दिया गया है। उन्होंने पार्टी से पूछे बिना लेटर जारी कर दिया था। जदयू के राष्ट्रीय प्रवक्ता राजीव रंजन ने कहा कि मणिपुर में एनडीए को समर्थन जारी रहेगा।

मणिपुर जदयू के प्रदेश अध्यक्ष के लेटर जारी करने के इस घटनाक्रम से सरकार की स्थिरता पर कोई असर नहीं पड़ने वाला था, लेकिन जदयू के प्रदेश अध्यक्ष के इस लेटर ने सियासी घमासान मचा दिया। बता दें कि जेडीयू केंद्र और बिहार में बीजेपी की प्रमुख सहयोगी है और बिहार में इसी साल चुनाव होने वाले हैं ऐसे में इस तरह की बयानबाजी या इस तरह के वाकये जदयू भाजपा के रिश्ते

को खराब कर सकते हैं। जदयू के साथ भाजपा की एनडीए सरकार बिहार में मजबूत है और इसे लेकर राजनीतिक कयासबाजी चलती रहती है।

बता दें कि मणिपुर में 2022 के विधानसभा चुनाव में जेडीयू ने छह सीटें जीतीं, लेकिन चुनाव के कुछ महीनों बाद, पार्टी के पांच विधायक भाजपा में चले गए थे, जिससे सत्तारूढ़ दल की संख्या मजबूत हो गई। 60 सदस्यीय विधानसभा में फिलहाल बीजेपी के 37 विधायक हैं और जदयू के एकमात्र विधायक। इसे नागा पीपुल्स फ्रंट के पांच विधायकों और तीन निर्दलीय विधायकों का समर्थन प्राप्त है, जिससे इसे आरामदायक बहुमत मिल गया है। मणिपुर की जदयू इकाई के प्रमुख केश बीरेन सिंह ने राज्यपाल अजय कुमार भल्ला को पत्र लिखा था।

मौनी अमावस्या पर चलेंगी 150 से ज्यादा स्पेशन ट्रेनें

हर चार मिनट पर मिलेगी एक ट्रेन

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रयागराज स्थित महाकुम्भ नगर में सबसे बड़े स्नान पर्व मौनी अमावस्या पर करोड़ों की संख्या में आने वाले श्रद्धालुओं के लिए प्रयागराज रेल मंडल ने 150 से अधिक मेला स्पेशल ट्रेन चलाने की योजना तैयार कर ली है। अधिकारियों ने बुधवार को यह जानकारी दी। प्रयागराज रेलवे के सीनियर पीआरओ अमित मालवीय ने कहा कि मौनी अमावस्या के दिन प्रयागराज रेलवे 150 से अधिक मेला स्पेशल ट्रेन चलाएगा।

उन्होंने बताया कि किसी स्टेशन से एक दिन में 150 से अधिक स्पेशल ट्रेनों का संचालन करना अपने आप में एक रिकॉर्ड होगा। मालवीय ने बताया कि प्रयागराज रेलवे से चलने वाली नियमित ट्रेनों और स्पेशल ट्रेनों की संख्या के अनुमान से मौनी अमावस्या के दिन लगभग हर 4 मिनट पर एक ट्रेन का संचालन होगा। उनके अनुसार सबसे अधिक रेलगाड़ियां प्रयागराज जंक्शन से चलेंगी,

इसके अलावा मण्डल के अन्य स्टेशनों से दिशावार स्पेशल गाड़ियों का संचालन किया जाएगा। उन्होंने बताया कि इसके अलावा नियमित ट्रेन का संचालन भी समय अनुसार किया जाएगा। उन्होंने बताया कि किसी स्टेशन से एक दिन में 150 से अधिक स्पेशल ट्रेन का संचालन करना अपने आप में एक कीर्तिमान होगा। मालवीय का कहना था कि कुम्भ 2019 में मौनी अमावस्या के पर्व पर लगभग 85 मेला स्पेशल ट्रेनों का ही संचालन हुआ था।

महाकुंभ 2025 में सभी रिकॉर्ड ध्वस्त होने का दावा: मालवीय ने दिव्य-भव्य महाकुम्भ 2025 में श्रद्धालुओं के सभी रिकॉर्ड ध्वस्त होने का दावा करते हुए कहा कि मकर संक्रांति के पहले अमृत स्नान के दिन लगभग 3.5 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं ने संगम स्नान किया, जिनके लिए प्रयागराज रेल मण्डल ने 101 मेला स्पेशल ट्रेन चलाई थी और यह अपने आप में एक रिकॉर्ड था। मालवीय का कहना है कि इसी के अनुरूप रेल प्रशासन महाकुम्भ के सबसे बड़े अमृत स्नान पर्व मौनी अमावस्या के लिए भी तैयारियां कर रहा है।

बांग्लादेशी घुसपैठियों को लेकर केंद्र सरकार ने सख्त रुख अपनाया

मुंबई (एजेंसी)। बांग्लादेशी घुसपैठियों को लेकर केंद्र सरकार ने सख्त रुख अपना लिया है। केंद्र सरकार ने महाराष्ट्र के मुख्य सचिव और पुलिस महानिदेशक को लिखित निर्देश दिया हगै कि वह बांग्लादेशी घुसपैठियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करे। केंद्रीय गृह मंत्रालय ने पूर्व सांसद राहुल रमेश शेवाले की मांग पर यह निर्देश जारी किया है। केंद्रीय गृह मंत्रालय ने महाराष्ट्र के मुख्य सचिव, पुलिस महानिदेशक और अन्य संबंधित एजेंसियों को बांग्लादेश और म्यांमार से महाराष्ट्र आने वाले अवैध प्रवासियों के

खिलाफ तत्काल कानूनी कार्रवाई करने का निर्देश दिया है। शिवसेना के उप नेता और पूर्व सांसद राहुल रमेश शेवाले की केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से बांग्लादेशी घुसपैठियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने की मांग पर संज्ञान लेते हुए केंद्रीय गृह मंत्रालय ने यह निर्देश दिए हैं। फिल्म अभिनेता सैफ अली खान पर हमले के मामले में गिरफ्तार आरोपी के बांग्लादेशी घुसपैठिया होने पर अब बांग्लादेशी घुसपैठियों पर कार्रवाई तेज होने की संभावना है। महाराष्ट्र के मंत्री संजय शिरसाट ने सोमवार को कहा कि छत्रपति संभाजीनगर में रह रहे अवैध बांग्लादेशी नागरिकों का पता लगाने के लिए जिला, नगर निकाय अधिकारियों और पुलिस की मदद से एक सर्वेक्षण किया जाएगा। जिले के प्रभारी मंत्री शिरसाट ने संवाददाताओं से बातचीत में कहा कि अधिकारी उन बांग्लादेशियों का पता लगाएंगे, जिन्होंने अवैध रूप से आधार कार्ड, मतदाता पहचान पत्र और अन्य दस्तावेज हासिल किए हैं।

गंगा एक्सप्रेसवे से कनेक्ट होंगे 2 बड़े एक्सप्रेसवे, सीएम योगी का ऐलान

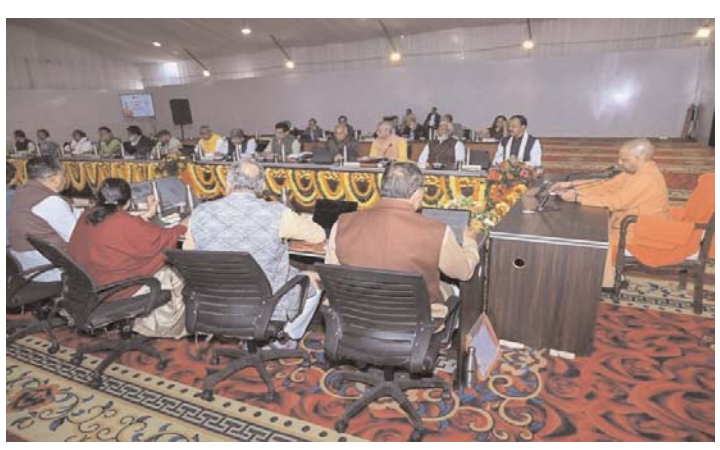

प्रयागराज (एजेंसी) प्रयागराज के महाकुंभ में आज यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मंत्रिपरिषद के साथ संगम में पवित्र स्नान किया और संगट तट पर पूजा-पाठ किया। कैबिनेट की

● आदित्यनाथ ने मंत्रिपरिषद के साथ संगम में पवित्र स्नान किया

मीटिंग में बड़े-बड़े फैसले लेने के बाद सीएम योगी 54 मंत्रियों के साथ संगम तट पर पहुंचे और आस्था की डुबकी लगाई। वहीं महाकुंभ में योगी कैबिनेट की बैठक में बड़े-बड़े फैसले भी लिए गए। इनमें सबसे बड़ा फैसला है- गंगा एक्सप्रेसवे के एक्सटेंशन को मंजूरी। इसे यूपी के दो बड़े एक्सप्रेसवे पूर्वांचल एक्सप्रेसवे और बुंदलेखंड एक्सप्रेसवे से जोड़ा जाएगा। इससे प्रदेश के सभी जिलों को हाईस्पीड नेटवर्क मिलेगा।

योगी कैबिनटे की बैठक में गंगा एक्सप्रेसवे के एक्सटेंशन को मंजूरी मिली है। यह (प्रयागराज से मिर्जापुर-भदोही-वाराणसी-चंदौली-गाजीपुर में पूर्वांचल एक्सप्रेस वे से जुड़ेगा। शुरुआत में यह 6 लेन में तैयार हो रहा है लेकिन अब इस एक्सप्रेस-वे को आगे जरूरत पड़ने पर बढ़ाकर 8 लेन का किया जा सकता है। इसके अलावा चित्रकूट से प्रयागराज को कनेक्ट किया जाएगा। इसको लेकर गंगा एक्सप्रेसवे को बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे से जोड़ने के प्रस्ताव को यूपी कैबिनेट ने हरी झंडी दिखाई है। इससे रोड कनेक्टिविटी और बेहतर होने वाली है। मेरठ से प्रयागराज तक बन रहा गंगा एक्सप्रेसवे अब मिर्जापुर, भदोही, वाराणसी और चंदौली से होते हुए गाजीपुर में पूर्वांचल एक्सप्रेसवे से जुड़ जाएगा। इसके बनने से पश्चिमी यूपी और एनसीआर से बिहार के लिए नया रूट भी मिल जाएगा। गाजीपुर का बड़ा इलाका बिहार से जुड़ा है। प्रस्ताव के तहत गंगा एक्सप्रेसवे एक्सटेंशन प्रयागराज से मिर्जापुर, भदोही, वाराणसी, चंदौली होते हुए गाजीपुर तक बनेगा। गाजीपुर में ही लखनऊ से पूर्वांचल एक्सप्रेसवे भी आया है। ऐसे में गंगा एक्सप्रेसवे गाजीपुर में पूर्वांचल एक्सप्रेसवे से जुड़ जाएगा। इसके साथ ही वाराणसी से चंदौली और चंदौली से सोनभद्र को जोड़ा जाएगा। यह एक्सप्रेसवे प्रयागराज-विंध्य-काशी एक्सप्रेसवे के रूप में जाना जाएगा।

गंगा एक्सप्रेस-वे का पहले चरण में निर्माण मेरठ से प्रयागराज के बीच किया जा रहा है, जो करीब 594 किलोमीटर लंबा है। एक्सप्रेसवे के निर्माण के बाद मेरठ से प्रयागराज तक 6 घंटें में सफर को पूरा कर सकेंगे। गंगा एक्सप्रेस-वे मेरठ से शुरू होकर हापुड़, बुलंदशहर, अमरोहा, संभल, बदायूं, शाहजहांपुर, हरदोई, उन्नाव, रायबरेली, प्रतापगढ़ के बाद प्रयागराज में पूरा होगा। यहां के कुल 518 गांवों से यह गुजरेगा।

दूसरे चरण में यह 5 और जिलों से जुड़ेगा जिसमें मिर्जापुर, भदोही, वाराणसी और गाजीपुर, बलिया शामिल हैं। गंगा एक्सप्रेसवे का दूसरा चरण 350 किलोमीटर का होगा।

आमजन 3 दिन तक कर सकेंगे राजभवन की ऐतिहासिकता का साक्षात्कार

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल के निर्देशानुसार गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में राजभवन 25 जनवरी से 27 जनवरी 2025 तक आमजन के लिए खोला जा रहा है। इस अवधि में आमजन राजभवन की ऐतिहासिकता का साक्षात्कार कर सकेंगे। राज्यपाल के अपर मुख्य सचिव श्री के.सी. गुप्ता ने बताया कि नागरिक निर्धारित अवधि 25 और 27 जनवरी को दोपहर 2 बजे से शाम 7 बजे तक और गणतंत्र दिवस 26 जनवरी को प्रातः 11 बजे से दोपहर 2 बजे तक राजभवन का अवलोकन कर सकेंगे। राजभवन में गणतंत्र दिवस के अवसर पर नागरिकों को 1796 ई. की ऐतिहासिक तोप और 1887 ई. में बना सुन्दर वैक्रेंट हॉल देखने मिलेगा। वैक्रेंट हॉल का वास्तुशिल्प और झूमर विशेष दर्शनीय है। इसी प्रकार संदीपनि सभागार स्थित उपहार गैलरी, आर्टिफिशियल वाइल्ड लाइफ पर आधारित पंचतंत्र उद्यान, सुन्दर-सुसज्जित लॉन, विभिन्न प्रजातियों के मनमोहक फुल-पेड़-पौधे भी देख सकेंगे। राजभवन में आने वाले आगंतुकों का गेट नंबर-2 प्रवेश और निकास होगा। वाहन पार्किंग मिंटो हॉल परिसर में रहेगी।

राज्यपाल ने सिकल सेल स्क्रीनिंग लक्ष्य की समय पूर्व पूर्ति पर दी बधाई

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने सिकल सेल स्क्रीनिंग में शत प्रतिशत उपलब्धि के लिए प्रदेशवासियों को बधाई दी है। उल्लेखनीय है कि मध्यप्रदेश ने अब तक कुल 90 लाख 98 हज़ार 902 लोगों की सिकल सेल स्क्रीनिंग कर समय पूर्व वार्षिक लक्ष्य की पूर्ति करने की सफलता अर्जित की है। मध्यप्रदेश ने 53 लाख 87 हज़ार 892 सिकल सेल कार्ड वितरण कर, देश में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने कहा कि यह अत्यंत हर्ष और गर्व की बात है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 'सिकल सेल उन्मूलन का संकल्प मध्यप्रदेश की धरती से ही लिया है। प्रदेश सरकार भी वर्ष 2047 तक सिकल सेल उन्मूलन के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने प्रदेशवासियों से आह्वान किया है कि सिकल सेल उन्मूलन प्रयासों के लिए आगे आए। सिकल सेल की जागरूकता में सहयोग कर प्रदेश को स्वस्थ और सशक्त बनाने में सक्रिय सहभागिता करे। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने कहा कि प्रदेश में अब तक 90 लाख से अधिक सिकल सेल स्क्रीनिंग किया जाना संबंधित विभागों के एकजुट और एकमेव प्रयासों का नतीजा है। उन्होंने इस उपलब्धि में सहयोगी अधिकारी-कर्मचारियों, स्वयं सेवी संगठनों, मैदानी कार्यकर्ताओं को शुभकामनाएं दी है।

15 वें राष्ट्रीय मतदाता दिवस की शपथ 25 जनवरी को

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मंत्रालय स्थित सरदार वल्लभ भाई पटेल पार्क में 15 वें राष्ट्रीय मतदाता दिवस की शपथ 25 जनवरी को प्रातः 11 बजे दिलायी जायेगी। इसमें देश की लोकतांत्रिक परम्पराओं की मर्यादा को बनाए रखने तथा स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण निर्वाचन की गरिमा को अक्षुण्ण रखते हुए, निर्भीक होकर, धर्म,वर्ग, जाति, समुदाय, भाषा अथवा अन्य किसी भी प्रलोभन से प्रभावित हुए बिना सभी निर्वाचनों में अपने मताधिकार का प्रयोग करने की शपथ ली जायेगी। सामान्य प्रशासन विभाग ने अधिकारियों-कर्मचारियों के साथ नागरिकों को जिलों में शपथ दिलाने के लिए प्रदेश के सभी संभागीय आयुक्त, कलेक्टर और मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत को निर्देश जारी किये हैं।

अब तक खरीदी गई 42 लाख मीट्रिक टन से अधिक धान

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री श्री गोविंद सिंह राजपूत ने बताया है कि न्यूनतम समर्थन मूल्य पर अभी तक 6 लाख 61 हजार 777 किसानों से 42 लाख 95 हजार 161 मीट्रिक टन धान की खरीदी उपार्जन केन्द्रों में हो चुकी है। धान का उपार्जन 23 जनवरी 2025 तक किया जायेगा। धान कॉमन का न्यूनतम समर्थन मूल्य 2300 रूपये और धान ग्रेड-ए का 2320 रूपये है। किसानों के आधार लिंक्ड बैंक खातों में अभी तक 7855 करोड़ 98 लाख रूपये की राशि अंतरित कर दी गई है। खरीदी गई धान में से 38 लाख 18 हजार 332 मीट्रिक टन उपार्जित धान का परिवहन किया जा चुका है। कुल 11 लाख 79 हजार 448 मीट्रिक टन धान मिलर्स को भेजी जा चुकी है। प्रदेश के बालाघाट में 5 लाख 47 हजार 336, कटनी 4 लाख 10 हजार 746, सतना 3 लाख 99 हजार 01, जबलपुर 3 लाख 76 हजार 76, रीवा 3 लाख 47 हजार 486, सिवनी 2 लाख 98 हजार 792, मण्डला 2 लाख 942, शहडोल 1 लाख 96 हजार 737, पन्ना 1 लाख 70 हजार 543, मैहर 1 लाख 68 हजार 200, नर्मदापुरम 1 लाख 65 हजार 152, सिंगरौली 1 लाख 44 हजार 30, उमरिया 1 लाख 28 हजार 750, सीधी 1 लाख 26 हजार 950, मऊगंज 97 हजार 491, अनूपपुर 97 हजार 420, दमोह 82 हजार 875, नरसिंहपुर 76 हजार 458, डिंडोरी 76 हजार 348, रायसेन 58 हजार 25, बैतूल 46 हजार 805, सीहोर 40 हजार 715, सागर विदिशा 1502, हरदा 1361, शिवपुरी 1246, मुरैना 237, अलीराजपुर 56 और झाबुआ जिले में 18 मीट्रिक टन धान की खरीदी की जा चुकी है।

विमुक्त जाति के 5 छात्रावासों में विवेकानन्द केन्द्र कन्याकुमारी परीक्षा दें हंसते-हंसते कार्यक्रम संचालित करेगा

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। प्रदेश के विमुक्त घुमन्तु और अर्द्धघुमन्तु कल्याण विभाग और विवेकानन्द केन्द्र कन्याकुमारी के बीच मंगलवार को विमुक्त घुमन्तु और अर्द्धघुमन्तु कल्याण राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती कृष्णा गौर की उपस्थिति में एमओयू हुआ। प्रदेश के विमुक्त घुमन्तु और अर्द्धघुमन्तु कल्याण विभाग के 5 छात्रावासों में विवेकानन्द केन्द्र कन्याकुमारी की भोपाल शाखा परीक्षा दें हंसते-हंसते और संस्कार वर्ग की नियमित गतिविधियां संचालित करेगा। एमओयू में छात्रावास के बालक-बालिकाओं के समग्र व्यक्तित्व विकास को ध्यान में रखते हुए गतिविधियों को शामिल किया गया है। विमुक्त घुमन्तु एवं अर्द्धघुमन्तु विभाग की ओर से उप संचालक सुश्री दीप्ति कोटस्थाने और विवेकानन्द केन्द्र कन्याकुमारी शाखा भोपाल की ओर से प्रांत संगठक सुश्री रचना दीदी ने एमओयू पर हस्ताक्षर किये। इस अवसर पर संचालक विमुक्त घुमन्तु और अर्द्धघुमन्तु कल्याण विभाग श्री नीरज वशिष्ठ

और विवेकानन्द केन्द्र कन्याकुमारी शाखा भोपाल के प्रांत कार्यालय प्रमुख श्री सुरेशचन्द्र सोनी और सह प्रांत प्रमुख श्री मनोज गुप्ता भी उपस्थित थे।

विवेकानन्द केन्द्र कन्याकुमारी शाखा भोपाल द्वारा प्रदेश के विमुक्त घुमन्तु और अर्द्धघुमन्तु विभाग के जिन 5 छात्रावासों में परीक्षा दें हंसते-हंसते कार्यक्रम संचालित होगा, उनमें विमुक्त जाति प्री-मेट्रिक बालक छात्रावास उज्जैन, प्री-मेट्रिक बालक छात्रावास गांधीनगर भोपाल, प्री-मेट्रिक बालक छात्रावास जीरापुर, प्री-मेट्रिक कन्या छात्रावास नेहरू नगर और प्री-मेट्रिक बालक छात्रावास राजगढ़ शामिल हैं।

परीक्षा दें हंसते-हंसते और संस्कार वर्ग की नियमित गतिविधियों में कहानी, खेल और गीतों के माध्यम से छात्र-छात्राओं में पढ़ाई के प्रति रूचि बनाये रखने पर जोर दिया जायेगा। इसके साथ ही छात्र-छात्राओं के संपूर्ण व्यक्तित्व विकास को केन्द्रित कर उन्हें शिक्षा दी जायेगी। साथ ही राष्ट्रीयता का भाव जागृत कर उन्हें राष्ट्र निर्माण में योगदान करने वाला सेवाभावी और कर्त्तव्यनिष्ठ नागरिक बनाना शामिल है। शुरूआती चरण में पाँच छात्रावासों में कार्यक्रम संचालित किये जा रहे हैं। भविष्य में विमुक्त घुमन्तु एवं अर्द्धघुमन्तु कल्याण विभाग के सभी छात्रावासों में कार्यक्रम आयोजित होंगे।

ऑनलाइन बिल सुधार प्रक्रिया लागू, समय सीमा में होगा निराकरण

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। क्या आपको बिजली बिल के संबंध में कोई शिकायत है ? अगर हाँ, तो अब न तो बिजली कार्यालय जाना पडेगा और न ही शिकायत हल होने में लगने वाले समय से परेशान होने की जरूरत है। अब मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी द्वारा शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के बिजली उपभोक्ताओं की बिल संबंधी सभी शिकायतों को हल करने के लिए

ऑनलाइन बिल सुधार प्रक्रिया लागू कर दी गयी है। अब उपभोक्ताओं की बिल संबंधी शिकायत के संबंध में ऑनलाइन आवेदन करने पर उसका हल किया जाएगा। इस संबंध में मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के आईटी अनुभाग द्वारा कार्रवाई तेज कर दी गयी है।

गौरतलब है कि कंपनी द्वारा निर्धारित ऑनलाइन प्रक्रिया के तहत अब उपभोक्ताओं की आकलित खपत, अधिक राशि के बिल, गलत बिल जारी होने संबंधी इत्यादि शिकायतों को निर्धारित समयावधि में हल किया जाएगा। इससे उपभोक्ताओं का समय भी बचेगा और कंपनी की पारदर्शी सेवा का लाभ भी मिल सकेगा।

शहीदों की स्मृति में 30 जनवरी को मौन धारण

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में अपने जीवन का बलिदान देने वाले शहीदों की स्मृति में 30 जनवरी को प्रातः 11 बजे सभी शासकीय कार्यालयों में 2 मिनिट का मौन रखा जाएगा। सामान्य प्रशासन विभाग ने सभी विभागाध्यक्ष, संभागीय आयुक्त और समस्त कलेक्टरों को इस आशय के निर्देश जारी किए हैं। शहीद दिवस को सम्पूर्ण गरिमा के साथ मनाने की अपेक्षा की गयी है। इस दिन को व्यापक रूप से आम जनता की भागीदारी से मनाए जाने के लिए प्रातः 11 बजे प्रदेश में कार्य और अन्य गतिविधियाँ रोककर दो मिनिट का मौन रखा जाए।

जहां कहीं संभव हो, दो मिनट के मौन की अवधि शुरू होने तथा समाप्त होने की सूचना सायरन बजाकर या आर्मी गन से दी जायेंगी। सायरन 10:59 बजे से 11 बजे तक बजाए जाने चाहिए और दो मिनट के बाद 11:02 बजे से 11:03 बजे तक पुनः क्लियर सायरन बजाए जाने चाहिए।

जहां सायरन उपलब्ध हो वहां यह कार्यविधि अपनाई जाए। सिग्नल (जहां उपलब्ध हो), के अनुसार सभी व्यक्ति खडे हो जाएं और मौन धारण करें। सभी शैक्षणिक संस्थाओं और सार्वजनिक उपक्रमों में शहीद दिवस को पूरी गंम्भीरता के साथ मनाया जाये। स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्रीय एकता के बारे में वार्ताएं और भाषण आयोजित किए जाने के भी निर्देश दिये गये हैं।

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में अपने प्राणों की आहूति देने वाले शहीदों की स्मृति में मंत्रालय स्थित सरदार वल्लभ भाई पटेल पार्क में 30 जनवरी को प्रातः 11 बजे दो मिनट का मौन धारण किया जाएगा।

स्वास्थ्य अधोसंरचना कार्य भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप समय सीमा में करें पूर्ण-उप मुख्यमंत्री

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा है कि प्रदेश में स्वास्थ्य अधोसंरचना का विस्तार और उच्च स्तरीय स्वास्थ्य सेवाओं का प्रदाय सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य अधोसंरचना कार्य भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप समय सीमा में पूरा करना आवश्यक है। उन्होंने सभी विभागीय प्रगतिरत परियोजनाओं को तय समय में पूरा करने और साथ-साथ फर्नीचर, उपकरण और मैनपावर की व्यवस्था सुनिश्चित करने के भी निर्देश दिए। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने मंत्रालय भोपाल में लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग के निर्माण कार्यों की वृहद समीक्षा की।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि स्वास्थ्य अधोसंरचना के कार्य सीधे आम जनता से जुड़े हैं, इन्हें सर्वोच्च प्राथमिकता से पूरा किया जाये। उन्होंने सभी कार्यों की रियल टाइम मॉनिटरिंग सुनिश्चित करने के लिए अद्यतन प्रगति एमआईएस पोर्टल पर अपडेट करने के निर्देश भी दिए।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि वर्तमान में प्रदेश में 8 मेडिकल कॉलेजों के निर्माण कार्य प्रगतिरत हैं। इन कार्यों को आगामी 2 वर्षों में पूर्ण करने के लिये योजना बनाकर कार्य करें और नियमित मॉनिटरिंग करें। किसी भी प्रकार की समस्या को तुरंत संज्ञान में लायें जिससे उनका त्वरित निदान किया जा सके। प्रशासनिक उदासीनता से कार्य की प्रगति प्रभावित नहीं होनी चाहिए। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि मेडिकल कॉलेजों से संबंधित अनुसांगिक अस्पतालों के निर्माण और उन्नयन कार्य को प्राथमिकता से पूर्ण किया जाये, जिससे एनएमसी (नेशनल मेडिकल काउंसिल) से अनुमोदन प्राप्त कर मेडिकल कॉलेजों का संचालन शीघ्र शुरू हो सके।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने सिंहस्थ 2028 के पूर्व उज्जैन मेडिकल कॉलेज का संचालन चालू हो इसके लिए निर्माण कार्य को समय से पूरा करने के निर्देश दिए।

उपभोक्ताओं के खातों में पहुंची 54 करोड, 62 लाख से अधिक की सब्सिडी

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी द्वारा अपने क्षेत्रान्तर्गत आने वाले भोपाल, नर्मदापुरम, ग्वालियर एवं चंबल संभाग के जिलों में पीएम सूर्यघर मुफ्त बिजली योजना के तहत अब तक कुल 8 हजार 170 उपभोक?ता पंजीकृत हुए हैं। इनमें से 7 हजार 14 उपभोक्ताओं को 54 करोड, 62 लाख 59 हजार रूपये की राशि सब्सिडी के रूप में उनके खातों में जमा कराई जा चुकी है। कंपनी के प्रबंध संचालक श्री क्षितिज सिंघल ने प्रधानमंत्री सूर्य घर योजना से संबंधित कार्यों की प्रगति की समीक्षा के दौरान रजिस्टर्ड उपभोक्ताओं से अपील की है कि वे प्रधानमंत्री सूर्य घर योजना में ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन उपरांत विद्युत वितरण कंपनी में रजिस्टर्ड अधिकृत वेंडर से ही सौर ऊर्जा संयंत्र लगवाएं। उन्होंने कहा कि देश के करोड़ों घरों को मुफ्त बिजली उपलब्ध कराने के उद्देश्य से पीएम सूर्य घर योजना प्रारंभ की गई है। लोगों को इस योजना का लाभ मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी द्वारा प्रदान किया जा रहा है। प्रबंध संचालक ने कहा कि इस योजना के तहत एक किलोवाट सोलर संयन्त्र लगाने पर 30 हजार रूपये, दो किलोवाट सोलर संयन्त्र लगाने पर 60 हजार रुपए तथा तीन किलोवाट या उससे ऊपर 10 किलोवॉट तक के सोलर संयन्त्र स्थापना पर 78 हजार रुपए की सब्सिडी केन्द्र सरकार द्वारा दी जा रही है। गौरतलब है कि पीएम सूर्यघर मुफ्त बिजली योजना का शुभारंभ 13 फरवरी 2024 को हुआ था। तब से लेकर अब तक हजारों बिजली उपभोक्ताओं को योजना से जोड़ा गया है। योजना में शामिल होने के लिए पीएम सूर्य घर योजना की वेबसाइट पर जाकर आवेदन किया जा सकता है। इसके अलावा अधिक जानकारी के लिए कंपनी की वेबसाइट अथवा उपाय एप, वॉट्सएप चेटबॉट व टोल फ्री नं, 1912 पर भी संपर्क किया जा सकता है।

किसानों को कम दरों पर उपलब्ध कराई जा रही है बीज, फर्टिलाइजर और मशीनरी की उपलब्धता

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। राज्य सरकार किसानों के कल्याण के लिये संकल्पित होकर कार्य कर रही है। कृषि विभाग की योजनाओं से किसानों को लाभान्वित किया जा रहा है। विभाग द्वारा संचालित खाद्य एवं पोषण सुरक्षा कार्यक्रम अंतर्गत 5 लाख 15 हजार 772 हितग्राही लाभान्वित हुए हैं। इसी तरह मध्यप्रदेश राज्य मिलेट मिशन योजना से 66 हजार 412 किसानों को लाभ मिला है। इनके अंतर्गत किसानों को सस्ते दाम पर बीज, फर्टिलाइजर और मशीनरी उपलब्ध करवाई जा रही है।

केन्द्र सरकार से सहायता प्राप्त सब मिशन ऑन एग्रीकल्चर एक्सटेंशन आत्मा कार्यक्रम अंतर्गत कृषि विस्तार सेवाओं में सुधार एवं

सुदृढ़ीकरण का कार्य जारी है। इसके तहत कृषक प्रशिक्षण, कृषक भ्रमण, कृषि विज्ञान मेला, किसान संगोष्ठी आदि के द्वारा किसानों को कृषि की नवीनतम तकनीकी की जानकारी दी जा रही है। वर्ष 2023-24 में 2 लाख 35 हजार 767 किसानों को इसका लाभ मिला है। किसानों को विकासखण्ड, जिला एवं राज्य स्तर पर पुरस्कृत भी किया जा रहा है।

बीज ग्राम कार्यक्रम अंतर्गत 2 लाख 92 हजार 750 किसानों को 80 हजार 275 क्विंटल बीज का वितरण किया गया। प्रदेश में किसानों को निःशुल्क स्वाइल हेल्थ कार्ड उपलब्ध कराये जा रहे हैं। स्वाइल हेल्थ कार्ड में अनुशंसित उर्वरक और पोषक तत्व की मात्रा अनुसार किसानों को अधिक से उत्पादन लेने के लिये प्रोत्साहित किया जा रहा है। विगत 2 वर्षों में 9 लाख 73 हजार 250 किसानों को स्वाइल हेल्थ कार्ड वितरित किये गये हैं। प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के तहत स्प्रिंकलर, ड्रिप वं रेनगन पर समस्त वर्ग के लघु एवं सीमांत कृषकों को इकाई लागत का 55 प्रतिशत एवं अन्य वर्ग के कृषकों को 45 प्रतिशत अनुदान दिया जा रहा है। वर्ष 2024-25 में 17 हजार 496 किसानों को लाभ प्रदान किया गया। किसानों को नलकूप खनन पर पंप स्थापना के लिये 75 प्रतिशत अधिकतम 15 हजार रूपये की राशि देने का प्रावधान है। वर्ष 2024-25 में 212 किसानों को इसका लाभ प्रदान किया गया।

मंत्री विश्वास सारंग ने तृतीय दिग्विजय सिंह मेमोरियल शूटिंग चैंपियनशिप का किया शुभारंभ

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। सहकारिता, खेल एवं युवा कल्याण मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने मंगलवार को मध्यप्रदेश शूटिंग एकेडमी, भोपाल में तृतीय दिग्विजय सिंह मेमोरियल शूटिंग चैंपियनशिप का शुभारंभ किया। इस अवसर पर मंत्री श्री सारंग ने शूटिंग अकादमी में नवनिर्मित रिसेप्शन भवन और स्टाफ क्वार्टर एवं मध्यप्रदेश राज्य घुड़सवारी अकादमी में बने स्टॉफ क्वार्टर और अस्तबल का लोकार्पण भी किया। मंत्री श्री सारंग ने स्व. श्री दिग्विजय सिंह को श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने कहा कि स्व. श्री दिग्विजय सिंह एक दूरदर्शी नेता थे, जिन्होंने 1999 से 2010 तक एनआरएआई (नेशनल राइफल एसोसिएशन ऑफ इंडिया) के अध्यक्ष के रूप में शूटिंग खेल को प्रोत्साहन देने के लिए सराहनीय कार्य किए। उनकी स्मृति में आयोजित यह चैंपियनशिप प्रदेश के खिलाड़ियों को नई प्रेरणा और बेहतर अवसर प्रदान करेगी। मंत्री श्री सारंग ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के विकसित भारत 2047 के संकल्प को साकार करने में युवाओं की अहम भूमिका होगी। उन्होंने युवाओं के शारीरिक और मानसिक विकास को प्राथमिकता देने की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि खेलों से जुड़ाव उन्हें एक बेहतर भविष्य प्रदान करेगा। उन्होंने कहा कि खेलों में युवाओं को आकर्षित करने के लिए अभिभावकों को अपनी सोच में सकारात्मक बदलाव लाना होगा। उन्हें यह विश्वास दिलाना होगा कि खेलों में उनके बच्चों का भविष्य सुरक्षित है। इसके लिये विभाग द्वारा अनेक कार्यक्रम एवं योजनाएं प्रारंभ की गई है, जिसके दूरगामी परिणाम देखने को मिलेंगे। मंत्री श्री सारंग ने शूटिंग में खिलाड़ियों के प्रदर्शन की सराहना करते हुए कहा कि प्रदेश के शूटिंग खिलाड़ी विश्व स्तर पर अपनी पहचान बना रहे हैं। उन्होंने कहा कि ओलंपिक एवं पैरालंपिक में पदक जीतकर प्रदेश का मान बढ़ाया है। मंत्री श्री सारंग ने कहा कि यह हमारे लिए अत्यंत गौरव का क्षण है कि भारतीय ओलंपिक शूटिंग टीम के खिलाड़ियों ने मध्यप्रदेश शूटिंग अकादमी में प्रशिक्षण प्राप्त कर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पदक हासिल किए हैं। यह उपलब्धि प्रदेश की खेल अधोसंरचना और हमारे खिलाड़ियों की कड़ी मेहनत का प्रमाण है। मंत्री श्री सारंग ने कहा कि राज्य सरकार खेल अधोसंरचना को सुदृढ़ बनाने और खिलाड़ियों को विश्वस्तरीय सुविधाएं प्रदान करने के लिए निरंतर प्रयासरत है। खेल और खिलाड़ियों के विकास के प्रति यह प्रतिबद्धता ही मध्यप्रदेश को खेलों का उत्कृष्ट केंद्र बना रही है।

मंत्री श्री सारंग ने चैंपियनशिप में भाग ले रहे सभी प्रतिभागियों को शुभकामनाएं दीं और उन्हें अपने सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि यह प्रतियोगिता न केवल खिलाड़ियों की प्रतिभा को निखारने का अवसर है, बल्कि उन्हें राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने का मार्ग भी प्रशस्त करेगी।

आरटीओ उड़नदस्ता ने 5 हजार रिश्वत मांगी

वाहन मालिक ने जबरन वसूली का आरोप लगाया, वीडियो आया सामने

मीडिया ऑडीटर, सिंगरौली (निप्र)। सिंगरौली जिले में आरटीओ उड़नदस्ता टीम पर 5 हजार रिश्वत मांगने के आरोप लगे हैं। जिला मुख्यालय से 7 किलोमीटर दूर परसौना कन्वेयर बेल्ट सड़क पर वाहन चेकिंग के दौरान एक वाहन मालिक और उड़नदस्ता टीम के बीच विवाद का वीडियो बुधवार को सामने आया है।

वाहन मालिक ने लगाया जबरन वसूली का आरोप: घटना के दौरान टीम ने एक दिन पहले मंगलवार को वाहन चालक से गाड़ी और मटेरियल के कागजात मांगे। वाहन चालक ने कांटा पर्ची न होने की बात कही। इसके बाद वाहन मालिक मौके पर पहुंचा। जिसकी टीम से बहस होने लगी। वाहन मालिक ने कर्मचारियों पर जबरन वसूली का आरोप लगाया है।

अधिकारी बोले- शासकीय कार्य में बाधा डाली गई: उड़नदस्ता टीम के प्रभारी अनिमेष जैन का कहना है कि यह रूटीन चेकिंग थी और वाहन मालिक ने शासकीय काम में बाधा डाली है। इसके खिलाफ हम केस दर्ज कराएंगे।

वहीं, अपर कलेक्टर अरविंद झा ने कहा कि अवैध वसूली के आरोपों की जांच कर कार्रवाई की जाएगी।

मध्य प्रदेश सरकार ने आरटीओ चेक पॉइंट बंद कर दिए हैं। इसके बाद से सिंगरौली में उड़नदस्ता टीम पर लगातार अवैध वसूली के आरोप लग रहे हैं। टीम में सिर्फ एक सिपाही आरटीओ विभाग का है, जबकि अधिकांश कर्मचारी आउटसोर्सिंग के माध्यम से नियुक्त किए गए हैं, जिससे वसूली के आरोपों को बल मिल रहा है।

सफाई कर्मियों के साथ महिला पार्षद पहुंची वार्ड 19

नालियों की सफाई की लगातार मिल रही थी शिकायत, निगरानी में करवाया काम

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। सीधी शहर के वार्ड 19 की पार्षद और भाजपा महिला मोर्चा की जिला अध्यक्ष पूनम सोनी बुधवार ने साफ-सफाई करवाई। स्थानीय निवासियों लगातार नालियों में जमा कचरे और दुर्गंध की शिकायत नगरपालिका से कर रहे थे। समस्याओं का निराकरण नहीं होने पर बुधवार को पार्षद सफाई कर्मियों की टीम के साथ मौके पर पहुंची। उन्होंने नालियों की साफ-सफाई का काम अपनी निगरानी में करवाया।

पार्षद पूनम सोनी ने बताया कि वार्ड 19 में कुल 17 छोटी-बड़ी नालियां हैं, जिनमें लंबे समय से कचरा जमा था। नागरिकों की शिकायतों पर तत्काल कार्रवाई करते हुए समस्या का समाधान किया।

नगरपालिका के सीएमओ मिनी अग्रवाल ने कहा कि क्षेत्र की जनप्रतिनिधि के रूप में पूनम सोनी ने अपनी जिम्मेदारी का बखूबी निर्वहन किया। उन्होंने सफाई कर्मियों की मांग पर तुरंत कार्रवाई की। साथ ही उन्होंने अन्य वार्डों के निवासियों से भी आग्रह किया कि वे इस तरह की समस्याओं के लिए सीधे नगरपालिका से संपर्क कर सकते हैं।

बस की टक्कर से बाइक सवार पिता-बेटी की मौत

बच्ची की मां गंभीर, गुस्साए गांव वालों ने लगाया जाम, शहडोल के ब्यौहारी में हादसा

मीडिया ऑडीटर, शहडोल (निप्र)। गोदावल मेला देखकर बाइक से लौट रहे एक परिवार को गहरवार कंपनी की बस ने पीछे से टक्कर मार दी। हादसे में बाइक सवार शेषमणि वैश्य और उनकी दो वर्षीय बेटी आरती की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि पत्नी गंभीर रूप से घायल हो गईं। हादसा बुधवार दोपहर शहडोल जिले के ब्यौहारी का है। घटना खरपा चौराहे के पास हुई। बस उमरिया से सीधी जा रही थी। प्रत्यक्ष दर्शियों के अनुसार, बाइक सड़क के सही तरफ चल रही थी। हादसे के बाद ड्राइवर और कंडक्टर बस को छोड़कर भाग गए। बस में 30 से 40 यात्री सवार थे। सभी को दूसरी बस से भेजा गया।

ग्रामीणों ने ब्यौहारी-सीधी मार्ग जाम किया: घटना के बाद स्थानीय लोगों में आक्रोश फैल गया। सैकड़ों ग्रामीणों ने ब्यौहारी-सीधी मार्ग पर जाम लगा दिया, जिससे दोनों तरफ वाहनों की लंबी कतारें लग गईं। ग्रामीणों की मांग है कि बस चालक की गिरफ्तारी के बाद ही जाम खोला जाएगा। पुलिस मौके पर पहुंचकर स्थिति को नियंत्रित करने का प्रयास कर रही है।

गंभीर रूप से घायल महिला को स्थानीय अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां वह जीवन और मृत्यु के बीच संघर्ष कर रही हैं। पुलिस फरार आरोपी बस चालक की तलाश जारी है।

बेल्ट का फंदा बनाकर पेड़ से लटका युवक

मीडिया ऑडीटर, छतरपुर (निप्र)। छतरपुर के राजनगर थाना क्षेत्र के पाय गांव में 30 वर्षीय युवक ने अपने घर के बाहर बेर के पेड़ पर फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। घटना मंगलवार देर रात की है। परिजन उसे तुरंत राजनगर अस्पताल ले गए, जहां से उसे जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया, लेकिन रास्ते में ही उसकी मौत हो गई। बुधवार दोपहर को शव का पोस्टमॉर्टम किया गया। जानकारी के अनुसार घटना के कुछ देर पहले ही मृतक शौकीलाल अहिरवार (30) अपने चचेरे भाई की शादी से लौटा था। शराब के नशे में वो बेल्ट का फंदा बनाकर पेड़ से लटक गया। देर रात जब उसकी पत्नी सीमा शौच के लिए बाहर निकली तो उसे पेड़ से लटका हुआ देखा।

जिला स्तरीय ओलिंपियाड परीक्षा शुरू

कक्षा 2 से 8 तक के 2944 में से पहले दिन 1398 छात्र हुए शामिल

मीडिया ऑडीटर, अनूपपुर (निप्र)। अनूपपुर जिले में बुधवार से दो दिवसीय जिला स्तरीय ओलिंपियाड परीक्षा शुरू हो गई। जिले के चारों विकासखंड मुख्यालयों में स्थापित परीक्षा केंद्रों पर यह परीक्षा चल रही है।

बुधवार को कलेक्टर हर्षल पंचोली और जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी तन्मय वशिष्ठ शर्मा ने शासकीय उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय जैतहरी पहुंचकर परीक्षा व्यवस्थाओं का जायजा लिया। निरीक्षण के दौरान सर्व शिक्षा अभियान के डीपीसी आशुतोष कुशवाहा और एपीसी संतोष कुमार तिवारी भी मौजूद थे।

परीक्षा के पहले दिन कक्षा 2 से 8 तक के पंजीकृत 2944 विद्यार्थियों में से 1398 छात्रों ने परीक्षा दी। शेष विद्यार्थी गुरुवार को परीक्षा में भाग लेंगे। यह परीक्षा शासकीय विद्यालयों के छात्रों में नेतृत्व क्षमता, प्रतिस्पर्धात्मक भावना और व्यक्तित्व विकास को बढ़ावा देने के लिए आयोजित की जाती है। इससे विद्यार्थियों को भविष्य की प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए अनुभव भी मिलता है।

कल 180 गांवों की बिजली बंद रहेगी

नए फीडर के जुड़ने से 6 घंटे तक चलेगा मेंटेनेंस

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। सीधी जिले में बिजली व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए 220 केवी विद्युत उपकेंद्र सीधी में नए फीडर को जोड़ने का कार्य किया जाएगा, जिसके कारण लगभग 180 गांवों की बिजली आपूर्ति 23 जनवरी को सुबह 10 बजे से शाम 4 बजे तक बाधित रहेगी।

अधीक्षण अभियंता मध्य प्रदेश पूर्व क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी लिमिटेड के अनुसार, इस दौरान 33 केवी के सेमरिया, सिहावल, मड़वास जेपी-1 (बरमबाबा) और जेपी-2 (बघवारी) फीडरों की बिजली आपूर्ति प्रभावित होगी। उन्होंने यह भी बताया कि कार्य की प्रगति के आधार पर बिजली कटौती की अवधि को घटाया या बढ़ाया जा सकता है।

जूनियर इंजीनियर विनोद पटेल ने बताया कि यह कार्य क्षेत्र के निवासियों को बेहतर बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए किया जा रहा है। नए फीडर के जुड़ने से न केवल बिजली आपूर्ति में सुधार होगा, बल्कि भविष्य में होने वाली तकनीकी समस्याओं को भी कम किया जा सकेगा।

टीबी उन्मूलन के लिए 100 दिवसीय निक्षय शिविर

68 लोगों का एक्स-रे किया गया, दो मरीजों को मिला पोषण सहयोग

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। रामपुर नैकिन ब्लॉक के ग्राम तितिरा और झांझ में बुधवार को टीबी उन्मूलन के लिए 100 दिवसीय निक्षय शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में 68 लोगों का चेस्ट एक्स-रे कर टीबी की जांच की गई। इस अवसर पर जनपद सदस्य आलोक शुक्ला ने दो टीबी मरीजों को गोद लेने की घोषणा की, जिसके तहत उन्हें पोषण आहार और नियमित दवाएं उपलब्ध कराई जाएंगी।

स्वास्थ्य विभाग रामपुर के अधिकारी सौरभ मिश्रा ने बताया कि शिविर में लोगों को टीबी के खतरों और बचाव के बारे में जागरूक किया गया। सीबीएमओ सदस्य प्रेरणा पाठक ने कहा कि क्षेत्र से टीबी को पूरी तरह समाप्त करने के लिए ऐसे शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। चिह्नित मरीजों को डॉट्स थेरेपी और अन्य आवश्यक सहायता प्रदान की जा रही है।

कार्यक्रम में एनटीईपी से एसटीएलएस प्रतिमा, एसटीएस प्रेरणा और एमटीएस सौरव के साथ ग्राम सरपंच नरेंद्र सिंह और अन्य ग्रामीण उपस्थित रहे। गोद लिए गए मरीजों की देखभाल में पोषण आहार के अलावा उनकी नियमित जांच और समय पर दवाई उपलब्ध कराना भी शामिल है।

पानी भरने को लेकर चचेरे भाइयों में विवाद

आठ लोगों ने कुल्हाड़ी और लाठियों से हमला किया, 3 लोग घायल

मीडिया ऑडीटर, छतरपुर (निप्र)। छतरपुर के ओरछा रोड स्थित ढीलापुर गांव में सोमवार सुबह पीने के पानी को लेकर एक परिवार में विवाद हो गया। जिसमें चचेरे भाई समेत 8 लोगों ने कुल्हाड़ी और लाठियों से हमला कर तीन लोगों को गंभीर रूप से घायल कर दिया। जानकारी के मुताबिक प्रकाश कुशवाहा सुबह 10 बजे मोटर पंप से पानी भरने गया, तब उनके चचेरे भाई बबलू कुशवाहा ने उनके साथ मारपीट शुरू कर दी। दरअसल, बबलू पहले पानी भरना चाहता था, जिसको लेकर दोनों के बीच पहले गाली-गलौज हुई। इसके बाद मारपीट की नौबत बन गई।

प्रकाश पर हमला होने के बाद पिता को बचाने आए बेटे देवेंद्र कुशवाहा पर बबलू ने कुल्हाड़ी से वार कर दिया। इस दौरान बबलू के परिवार के सात अन्य सदस्य- नंदू, पवन, राजेंद्र, लच्छी बाई, अंजली और चिंग गुटिया भी मौके पर पहुंच गए। सभी ने मिलकर प्रकाश की पत्नी बृजकुंवर कुशवाहा पर भी हमला कर दिया। घायल देवेंद्र ने बताया कि वह केवल अपने पिता की मदद करने गया था, लेकिन उस पर और उसकी मां पर भी जानलेवा हमला कर दिया गया।

जिला हॉस्पिटल में चल रहा इलाज: इस विवाद में प्रकाश, बृजकुंवर और देवेंद्र गंभीर रूप से घायल हो गए। जिनको जिला हॉस्पिटल में इलाज चल रहा है। थाना प्रभारी दीपक यादव के अनुसार मामला दर्ज कर आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए कार्रवाई शुरू कर दी गई है।

बांध निर्माण से प्रभावित किसान कलेक्टर पहुंचे

जितनी जमीनें जा रही हैं, उतना मुआवजा नहीं मिल रहा, सटई तहसील में बन रहा बांध

मीडिया ऑडीटर, छतरपुर (निप्र)। छतरपुर के बिजावर विधानसभा क्षेत्र के सटई तहसील के करीब चार दर्जन किसानों ने गुरुवार को कलेक्टर को शिकायत आवेदन सौंपा है। यह मामला भूमि अधिग्रहण में मुआवजे से जुड़ा हुआ है, जिसका किसानों ने विरोध जताया है। बुधवार दोपहर को सिलावट, पड़रिया, कदवा और नैंगुवा गांव के करीब 40 किसानों ने कलेक्टर कार्यालय पहुंचकर शिकायती आवेदन दिया।

किसानों ने कहा कि नैंगुवा के पास लघु सिंचाई योजना के अंतर्गत एक बांध का निर्माण हो रहा है। जिसके लिए सरकार उनकी जमीन भूमि अधिग्रहण कर रही है, लेकिन उन्हें उचित मुआवजा नहीं दिया जा रहा है। इस कारण कलेक्टर से जांच कर कार्रवाई करने की मांग की है।

जमीन का उचित मुआवजा नहीं मिल रहा: प्रभावित किसान जितेंद्र सिंह ने बताया कि उनके पास दो से ढाई एकड़ जमीन है, जो बांध निर्माण में जा रही है। उनका आरोप है कि जितनी जमीन अधिग्रहित की जा रही है, उसके मुताबिक उन्हें न तो उचित मुआवजा दिया जा रहा है और न ही इससे जुड़ी पूरी जानकारी दी जा रही है।

सिलावट के किसान अजय दुबे ने बताया कि उन्होंने पहले भी एसडीएम और कलेक्टर से शिकायत की थी, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई। वहीं, किसान आनंदी अनुरागी ने भी अपनी जमीन के बदले उचित मुआवजा न मिलने की शिकायत की।

फिलहाल मामले में भू-अभिलेख अधिकारी आदित्य सोनकिया ने आश्वासन दिया है कि जल्द ही मामले की जांच कर किसानों की समस्याओं का समाधान किया जाएगा। यह बांध लघु सिंचाई योजना के तहत बनाया जा रहा है, जिससे क्षेत्र के किसानों को सिंचाई की सुविधा मिलेगी।

दो अलग-अलग क्षेत्र में नाबालिगों ने लगाई फांसी

बालक और बालिका की मौत, आत्महत्या के कारणों का पता नहीं

मीडिया ऑडीटर, शहडोल (निप्र)। शहडोल जिले में दो अलग-अलग थाना क्षेत्रों में एक किशोर और एक किशोरी ने फांसी लगाकर जान दे दी। सीधी थाना क्षेत्र के रिमार गांव में 14 वर्षीय ध्यान सिंह पाव ने घर के पास स्थित बरगद के पेड़ पर फांसी लगा ली। वहीं, जयसिंहनगर थाना क्षेत्र में 15 वर्षीय संजना अहिरवार ने अपने घर में ही फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली।

दोनों घटनाओं की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची। दोनों शवों का पोस्टमॉर्टम कराया गया। हालांकि, दोनों के आत्महत्या के कारणों का अभी तक पता नहीं चल पाया है। पुलिस ने दोनों मामलों में मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है।

शहडोल संभाग में कमिश्नर ने की विकास कार्यों की समीक्षा

मनरेगा के मजदूरों को समय पर भुगतान और गौशालाओं को जल्द चालू करने के दिए निर्देश

मीडिया ऑडीटर, शहडोल (निप्र)। शहडोल संभाग की कमिश्नर सुरभि गुप्ता ने आज संभाग में चल रहे विभिन्न विकास कार्यों की व्यापक समीक्षा की। बैठक में मनरेगा, गौशाला निर्माण, ग्रामीण यांत्रिकी सेवा और सड़क विकास निगम के कार्यों की प्रगति पर विस्तार से चर्चा हुई।

कमिश्नर ने मनरेगा के तहत शहडोल और अनूपपुर जिला पंचायतों को मजदूरों के समय पर भुगतान सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

गौशालाओं को शीघ्र चालू करने की हिदायत: उन्होंने कहा कि मजदूरों को रोजगार की कमी नहीं होनी चाहिए। गौशालाओं के संबंध में उन्होंने अधूरी और बंद पड़ी गौशालाओं को शीघ्र चालू करने के निर्देश दिए।

ग्रामीण यांत्रिकी सेवा के तहत चल रहे सड़क और भवन निर्माण कार्यों को निर्धारित समय सीमा में पूरा करने पर विशेष जोर दिया गया। खनिज मद से संबंधित परियोजनाओं की समीक्षा करते हुए, उन्होंने रुके हुए प्रोजेक्ट्स को जल्द शुरू करने के निर्देश दिए।

सड़क विकास निगम को शहडोल-उमरिया मार्ग पर तेजी लाने का निर्देश: सड़क विकास निगम को शहडोल-उमरिया मार्ग के निर्माण कार्य में तेजी लाने और निर्माण में लापरवाही बरतने वाली एजेंसियों को तुरंत नोटिस जारी करने का निर्देश दिया गया। कमिश्नर ने सभी विभागों को गुणवत्ता के साथ कोई समझौता न करने की सख्त हिदायत दी और सभी अधूरे कार्यों को समयबद्ध तरीके से पूरा करने पर बल दिया।

कार्यालय नगर पालिक निगम रीवा, जिला- रीवा (म.प्र.)

//निविदा सूचना //

क्रमांक-385/ई-टेंडर/स्वास्थ्य शाखा/न.पा.नि./2025 रीवा, दिनांक 21.01.2025

निम्नलिखित कार्य हेतु केन्द्रर्यकृत प्रणाली में पंजीकृत ठेकेदारों से ऑनलाईन निविदाएँ आमंत्रित की जाती हैं। निविदा का विस्तृत विवरण वेबसाइट **https://mptenders.gov.in** पर देखा जा सकता है।

क्र.	टेण्डर क्र. एवं जारी दिनांक	कार्य का नाम	कार्य की लागत	निविदा प्रपत्र का मूल्य एवं EMD	निविदा की अंतिम तिथि
1.	2025_UAD_397505_1	FABRICATION/INSTALLATION OF TANK/ VACCUM PUMP ON 02 NOS OF OLD CHASSIS, (PROVIDED BY MUNICIPAL CORPORATION REWA).	06.48 लाख	2000/- 6480/-	04/02/2025 17:30 बजें तक।

नोट: – निविदा से संबंधित किसी भी प्रकार का संशोधन का प्रकाशन ऑनलाईन **https://mptenders.gov.in** की वेबसाइट पर ही किया जायेगा, पृथक से समाचार पत्र में प्रकाशन नहीं किया जावेगा।

स्वास्थ्य अधिकारी/ वाहन प्रभारी
नगर पालिक निगम
रीवा (म.प्र.)

विचार

कब तक अनसुलझा रहेगा नेताजी की मौत का रहस्य?

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महानायक नेताजी सुभाष चंद्र बोस की मौत का रहस्य आज भी अनसुलझा है। दरअसल उनकी मृत्यु के संबंध में कई दशकों से यही दावा किया जाता रहा है कि 18 अगस्त 1945 को सिंगापुर से टोक्यो (जापान) जाते समय ताइवान के पास फार्मोसा में उनका विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया था और उस हवाई दुर्घटना में उनका निधन हो गया था। नेताजी ने 16 अगस्त 1945 को टोक्यो से ताइपेई के लिए उड़ान भरी थी और जापानी द्वितीय विश्व युद्ध का उनका विमान 18 अगस्त की सुबह ताइपेई के पास दुर्घटनाग्रस्त हो गया था। उसके बाद जापान सरकार द्वारा घोषणा की गई थी कि उस दुर्घटना में विमान में सवार सभी 25 लोगों की मौत हो गई, जिनमें नेताजी सुभाष चंद्र बोस भी शामिल थे। 18 अगस्त 1945 को ताइवान के ताइपेई में विमान दुर्घटना में उनकी मौत की जापान सरकार द्वारा की गई आधिकारिक घोषणा को भारत सरकार ने भी स्वीकार कर लिया था लेकिन आज भी कई लोग इसे मानने को तैयार नहीं हैं। दरअसल उनके जीवित होने और गुमनामी में जीवन जीने के दावे किए जाते रहे हैं और इस विषय पर कई बार जांच भी हुई है। हालांकि नेताजी के जीवित होने का दावा करने वाले लोगों ने कई बार अपने दावों का समर्थन करने के लिए सबूत पेश किए लेकिन उन सबूतों को प्रायः संदिग्ध माना गया है और कहा जाता रहा है कि उनके जीवित होने के दावे के समर्थन में कोई ठोस सबूत नहीं हैं।

दरअसल नेताजी का शव कभी नहीं मिला और कुछ अन्य कारणों से भी उनकी मौत के दावों पर आज तक विवाद बरकरार है। उनकी मृत्यु का रहस्य जानने के लिए विभिन्न सरकारों द्वारा पूर्व में कुछ आयोगों का गठन भी किया जा चुका है और कोलकाता हाईकोर्ट द्वारा नेताजी के लापता होने के रहस्य से जुड़े खुफिया दस्तावेजों को सार्वजनिक करने की मांग पर सुनवाई के लिए स्पेशल बेंच भी गठित की गई किन्तु अभी तक रहस्य से पर्दा नहीं उठा है। फैजाबाद के गुमनामी बाबा से लेकर छत्तीसगढ़ के रायगढ़ जिले तक में नेताजी के होने संबंधी कई दावे भी पिछले दशकों में पेश हुए किन्तु सभी की प्रामाणिकता संदिग्ध रही और नेताजी की मौत का रहस्य यथावत बरकरार है। हालांकि जापान सरकार बहुत पहले ही इस बात की पुष्टि कर चुकी है कि 18 अगस्त 1945 को ताइवान में कोई विमान हादसा हुआ ही नहीं और भारत सरकार द्वारा कुछ समय पूर्व सार्वजनिक की गई नेताजी से संबंधित कुछ गोपनीय फाइलों में मिले एक नोट से तो यह सनसनीखेज खुलासा भी हुआ कि 18 अगस्त 1945 को हुई कथित विमान दुर्घटना के बाद भी नेताजी ने तीन बार 26 दिसम्बर 1945, 1 जनवरी 1946 तथा फरवरी 1946 में रेडियो द्वारा राष्ट्र को सम्बोधित किया था। इस खुलासे के बाद से ही नेताजी की मौत का रहस्य और गहरा गया था।

युद्धमुक्त विश्व के ट्रंप के संकल्पों की रोशनी

ललित गर्ग

राष्ट्रपति के तौर पर अपने दूसरे कार्यकाल पर लौटने से पहले ट्रंप ने 'तीसरा विश्व युद्ध' रोकने की कसम खाकर दुनिया में शांति, अमन एवं अयुद्ध की संभावनाओं को बल दिया है। 47वें राष्ट्रपति के रूप में ट्रंप ने शपथ से एक दिन पहले गाजा में हुए युद्ध विराम का क्रेडिट भी लिया। रूस और यूक्रेन युद्ध भी खत्म करने की प्रतिबद्धता दोहरायी गयी है। बावजूद इनके विश्व युद्ध के कयास तेजी से लग रहे हैं। इसे लेकर भी कई सवाल उठते हैं कि या सच में तीसरा विश्व युद्ध होना इतना आसान है? लेकिन डोनाल्ड ट्रंप ने कहा, 'मैं यूक्रेन में युद्ध खत्म कर दूंगा। मैं मध्य पूर्व में अराजकता रोक दूंगा और मैं तीसरे विश्व युद्ध को होने से रोक दूंगा।

' निश्चित ही ट्रंप के इन संकल्पों से अमेरिका में एक नए युग का आगाज हो रहा है, जो दुनिया में भी एक नई युद्ध मुक्त समाज-संरचना के बड़े बदलावों की ओर इशारा कर रहा है। राष्ट्रपति चुने जाने के बाद से ही ट्रंप कई संकेत ऐसे दे चुके हैं, जिनसे लगने लगा है कि दुनिया बदलने वाली है। ये बदलाव इस बात पर केंद्रित रहेंगे कि अमेरिका को फिर एक बार महान बनना है। यह 'मेक अमेरिका ग्रेट अगेन' का नारा डोनाल्ड ट्रंप की एक नई पहचान बन गया है और बहुत संभावना है कि इस बार ट्रंप अपने सपने को साकार करने के लिए दुस्साहस का भी परिचय देते हुए युद्ध की मानसिकता वाले देशों की सोच में बदलाव का कारण बन जाये।

विश्व में अनेक देशों के बीच युद्ध चल रहे हैं एवं ऐसे ही युद्ध की व्यापक संभावनाएं बनी हुई हैं। विश्व युद्ध कई कारणों से शुरू हो सकते हैं। जैसे राष्ट्रवाद यानी अपने देश के प्रति अत्यधिक लगाव और अन्य देशों के प्रति घृणा। जब राष्ट्रवाद चरम पर पहुंच जाता है तो युद्ध की स्थिति पैदा हो सकती है या फिर एक शक्तिशाली देश दूसरे देशों पर अपना अधिकार जमाना चाहता है, तो इससे युद्ध की स्थिति पैदा हो सकती है। इसके अलावा देशों के बीच आर्थिक प्रतिस्पर्धा भी युद्ध का कारण बन सकती है। साथ ही धार्मिक मतभेद भी युद्ध का कारण बन सकते हैं और किसी देश में राजनीतिक अस्थिरता होने पर पड़ोसी देशों में भी अशांति फैल सकती है और युद्ध की स्थिति पैदा हो सकती है। युद्ध की इन व्यापक संभावनाओं पर ट्रंप के संकल्प से विराम लगना विश्व की समाज-व्यवस्था, आर्थिक विकास एवं सह-जीवन के लिये एक शुभ संकेत है। क्योंकि विश्व युद्ध के परिणाम बहुत ही विनाशकारी होते हैं। इसमें लाखों लोग अपनी जान गंवा देते हैं। युद्ध से देशों की अर्थव्यवस्था को भी भारी नुकसान पहुंचता है। साथ ही युद्ध से समाज में अस्थिरता फैल जाती है, महंगाई, बेरोजगारी, गरीबी बढ़ जाती है और युद्ध के बाद देशों के राजनीतिक नक्शे में बदलाव आ सकता है।

अमेरिका दुनिया में अमन चाहता है और नये राष्ट्रपति ट्रंप ने यदि किसी भी देश के युद्ध में सेना नहीं भेजने का संकल्प लिया है तो इससे दुनिया में युद्ध की संभावनाओं पर विराम लगना तय है। क्योंकि अब तक शक्तिशाली राष्ट्र अमेरिका ही दुनिया मे युद्ध की भूमि तैयार करता रहा है, अपनी सेना एवं सैन्य सामान भेज कर युद्ध की भूमि को उर्वरा बनाता रहा है। विश्व समुदाय कई संकटों का सामना कर रहा है- संघर्ष और हिंसा, आतंक एवं अलगाव, युद्ध एवं राजनीतिक वर्चस्व, गरीबी एवं बेरोजगारी, लगातार सामाजिक-आर्थिक असमानताएँ, पर्यावरणीय संकट और दुनिया भर के लोगों के स्वास्थ्य और भलाई के लिए चुनौतियाँ आदि जटिलतर स्थितियों के बीच ट्रंप के नये संकल्प एवं योजनाओं की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। आज युद्ध और तनाव की समस्या बढ़ती जा रही है। हथियारों का उत्पादन लगातार बढ़ता जा रहा है। हर देश परमाणुशक्ति संपन्न बनने के लिए प्रयासरत है। यह एक अजीबोगरीब स्थिति है। युद्ध की आशंका को खत्म करने के लिए हाथियारों का जखीरा बढ़ाया जा रहा है। पहले बीमारी पैदा की जा रही है, फिर उसके इलाज का उपाय ढूंढा जा रहा है। इसमें अब तक अमेरिका की ही सर्वाधिक भूमिका रही है, लेकिन अब उसके नये राष्ट्रपति की युद्धमुक्त विश्व संरचना की सोच से दुनिया में शांति एवं अमन कायम होगा। युद्ध से कभी किसी का भला नहीं होता। वह सदैव अपने पीछे दुख भरी यादें छोड़कर जाता है। युद्ध से किसी मां का बेटा उसे बिछड़ जाता है, किसी बहन का भाई उससे बिछड़ जाता है, कोई स्त्री अपने पति को खो देती है, कोई बेटी अपने पिता को खो देती है। इस तरह युद्ध केवल जान लेता है। इसके अलावा युद्ध से संपत्ति भी नष्ट होती है एवं विकास अवरूद्ध होता है। इसके विपरीत यदि सब जगह शांति हो, लोग आपस में नहीं लड़ें, देशों में आपस में युद्ध नहीं हो, तो विकास होता है।

ट्रंप ने अमेरिकी राजनीति के तेवर-कलेवर को तो बदला ही है और वह वहां लोकतंत्र को भी बदलने जा रहे हों, तो कोई आश्चर्य नहीं। उनकी टीम के अनेक दिग्गज परिवर्तन के आकांक्षी हैं। न जाने कितने परिवर्तन ट्रंप के शासन में लागू होंगे। उम्मीद करनी चाहिए कि ट्रंप की नई टीम अमेरिकी परंपराओं का यथासंभव निर्वाह करते हुए ही देश को फिर से महान बनाएगी। लेकिन इस बार अमेरिकी परम्पराओं में युद्ध एवं हिंसा के स्थान पर शांति, विकास एवं हथियार मुक्ति के संकल्प होना बड़ी एवं राहतभरी बात है। हालांकि, अमेरिका को महान बनाने के अभियान पर कई सवाल भी हैं। क्या अमेरिकी निर्णायकों ने मान लिया है कि अमेरिका अब महान नहीं रहा? इस अभियान के नाम से तो शायद यही लगता है कि अमेरिकी विचारकों ने अपने देश के महान न रह पाने की वजहों का पता भी लगा लिया है। उनकी नजर उन अमेरिकी चालाकियों पर भी निस्संदेह पड़ी होगी, जिनकी वजह से अमेरिकियों की अक्सर आलोचना होती है। इन वजहों में युद्ध एवं हथियारों की होड़ बड़ी वजह रही है। अनेक राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि युद्ध, हिंसा, आतंकमुक्त नये अमेरिका को विकसित करने एवं विश्व में शांति के संकल्प को देखते हुए अमेरिका को शुरू से ही भारत के साथ खड़ा रहना चाहिए। भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है और अमेरिका सबसे पुराना जीवित लोकतंत्र है, दुनिया में युद्ध एवं आतंक के खिलाफ भारत हमेशा अग्रसर रहा है, युद्ध का अंधेरा मिटाने, शांति का उजला करने एवं अहिंसा-सहजीवन की कामना ही भारत का लक्ष्य रहा है। इसीलिये भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी लगातार युद्ध विराम की कोशिश करते रहे हैं।

ट्रंप के राष्ट्रपति बनने के बाद भारत और अमेरिका के रिश्तों पर क्या असर होगा, इसे लेकर विशेषज्ञ कई तरह की उम्मीदें जता रहे। जानकारों के मुताबिक, ट्रंप के आने से भारत और अमेरिका के संबंध और गहरे होंगे। चीन को लेकर दोनों देशों की चिंता इन्हें करीब लाएगी। यह ट्रेंड पिछले पांच अमेरिकी राष्ट्रपतियों के कार्यकाल जैसा ही रहेगा। क्राड और मजबूत होगा। प्रशासन के कई विभागों में भारत के अच्छे संबंध बनेंगे। राजनीतिक और वैचारिक तालमेल भी अच्छा रहने की उम्मीद की जा रही। इसके साथ ही रक्षा, खुफिया और सुरक्षा मामलों में दोनों देशों के बीच भरोसा बढ़ेगा। टेक्नोलॉजी में सहयोग की संभावनाएं बढ़ने के आसार हैं। सबसे अहम है भारत की युद्ध एवं आतंक मुक्त विश्व बनाने की योजना, इसको लेकर ट्रंप भी आगे आये है जो नये सूरज का अभ्युदय है। लेकिन ट्रंप का नया दौर कहीं मौखिक हमलों या कटु उद्गारों तक ही सीमित न रह जाए। इसके लिये जरूरी है कि वह भारत की शांतिपूर्ण नीतियों एवं योजनाओं को अग्रसर करें। भारत सहित तमाम दुनिया यही उम्मीद करेगी कि ट्रंप दुनिया में चल रहे बड़े युद्धों और छद्म युद्धों को रोकने में सफलता हासिल करें साथ ही आतंकवाद के खिलाफ ईमानदार रवैया अपनाये ताकि नई उबरती उभरती दुनिया में अमेरिकी सचमुच महानता का वरन कर सके।

केजी से पीजी तक फ्री एजुकेशन और मुफ्त इलाज- कब साकार होगा यह सपना

संतोष पाठक

भारतीय जनता पार्टी ने दिल्ली विधानसभा चुनाव को लेकर 21 जनवरी 2025 को जारी किए गए अपने दूसरे संकल्प पत्र में यह वादा किया है कि दिल्ली की सत्ता में आने पर पार्टी जरूरतमंद छात्रों को केजी से पीजी तक फ्री शिक्षा देगी। इस पर पलटवार करते हुए आम आदमी पार्टी के सुप्रीमो अरविंद केजरीवाल ने आरोप लगाया है कि दिल्ली की सत्ता में आने पर भाजपा मुफ्त शिक्षा और मुफ्त इलाज बंद कर देगी।

राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप से अलग हटकर देखा जाए तो फ्री एजुकेशन का यह मसला अपने आप में बहुत ही गंभीर मसला है और दुर्भाग्य से इस परिस्थिति के लिए इस देश के सभी राजनीतिक दल जिम्मेदार है। आज कोई भी राष्ट्रीय या बड़ा क्षेत्रीय दल सार्वजनिक शिक्षा और स्वास्थ्य की बदहाली के लिए अपने आपको जिम्मेदार से मुक्त नहीं बता सकता है क्योंकि लगभग सभी राजनीतिक दलों ने कभी न कभी सत्ता का सुख जरूर भोगा है। गठबंधन राजनीति के दौर में, देश की राजनीति में सक्रिय ज्यादातर राजनीतिक दल या तो केंद्र की सत्ता में भागीदार रहे हैं या किसी ना किसी राज्य में सरकार चला चुके हैं या वर्तमान में भी चला रहे हैं।

वास्तविकता तो यह है कि भारत जैसे कल्याणकारी राज्य में मुफ्त शिक्षा और मुफ्त इलाज जैसे बेसिक दायित्वों से लगभग सभी सरकारों ने पल्ला झाड़ लिया है। मुफ्त शिक्षा में कई तरह की शर्तें लगा दी गई हैं। सरकारी स्कूलों की हालत हर गुजरते दिन के साथ खराब होती जा रही है। देश की राजधानी दिल्ली के सरकारी स्कूलों में जब साइंस और मैथ्स जैसे विषयों के अध्यापकों की भारी कमी है तो देश के अन्य राज्यों के स्कूलों का अंदाजा आप लगा सकते हैं। देशभर के सरकारी स्कूलों में मिलने वाली ड्रेस की गुणवत्ता और किताबों पर लगातार सवाल उठते रहते हैं। एनसीईआरटी तो समय पर किताब छपवाना ही भूल गई है। मिड डे मील ने तो स्कूलों में पढ़ाई की हालत और ज्यादा खराब कर दी है लेकिन इसके विकल्प की भी कोई तलाश नहीं की जा रही है।

सरकारी अस्पतालों की हालत भी कितनी दयनीय हो चुकी है, यह सब जानते हैं। दिल्ली के एम्स जैसे अस्पताल में भी ऑपरेशन की डेट कई-कई साल बाद मिलने की खबरें लगातार आती हैं। एम्स और सफदरजंग जैसे अस्पतालों के इर्द-गिर्द खुल चुके सैकडों प्राइवेट लैब्स यह बताने के लिए काफी है कि इन दोनों सरकारी अस्पतालों में मुफ्त इलाज की आस में आने वाले लोगों को हजारों रुपए खर्च कर बाहर से ही जांच करवाना पड़ता है। सरकारी अस्पताल में पूरी दवाई मिल जाए, इसकी उम्मीद तो अब लोग वर्षों पहले ही छोड़ चुके हैं लेकिन अब उचित जांच और उचित इलाज की उम्मीद भी दम तोड़ती नजर आ रही है। जब दिल्ली के सरकारी अस्पतालों की हालत इतनी खराब है तो आप देश के अन्य राज्यों के सरकारी अस्पतालों की दुर्दशा का अंदाजा बखूबी लगा सकते हैं। विडंबना देखिए कि, सरकारों ने इस बारे में अब सोचना तक छोड़ दिया है, कार्रवाई के बारे में तो भूल ही जाइए। आंकड़े बताते हैं कि देश में डॉक्टरों की बड़े पैमाने पर कमी है लेकिन एमबीबीएस जैसे बेसिक डॉक्टरी की पढ़ाई पर भी सरकार का फोकस नहीं है , जिससे इस कमी को दूर किया जा सकता है।

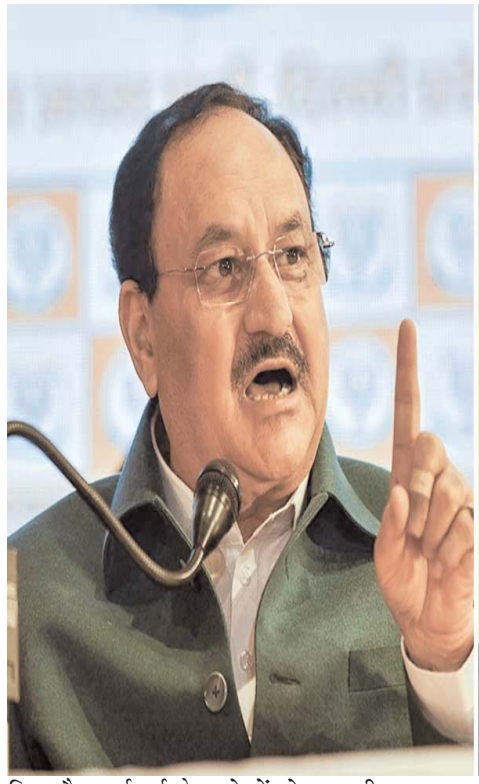

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, पिछले साल 13 लाख से ज्यादा विद्यार्थियों ने नीट परीक्षा को क्वॉलिफाई किया था लेकिन देश में एमबीबीएस की सीटें एक लाख 8 हजार के लगभग ही है। इसमें से भी सरकारी सीटें सिर्फ 56 हजार के लगभग ही है। प्राइवेट मेडिकल कॉलेजों में एक साल की फीस एक से डेढ़ करोड़ के बीच है यानी एमबीबीएस की चार सालों की पढ़ाई के लिए प्राइवेट कॉलेजों में 4 करोड़ से लेकर 6 करोड़ तक सिर्फ फीस ही देनी होगी। अब इसमें बाकी खर्चों को भी जोड़ लीजिए। सोचिए, इस हालत में भला मिडिल क्लास का कौन सा परिवार अपने बच्चों को डॉक्टर बनाने के बारे में सोच सकता है ? सरकारों ने लोगों को मुफ्त और उचित इलाज नहीं दे पाने की अपनी नाकामी को छिपाने के लिए बीमा योजनाओं का सहारा लेना शुरू कर दिया है। जिन योजनाओं का फायदा आम लोगों से ज्यादा प्राइवेट अस्पतालों को ही हो रहा है।

फ्री, फ्री और रेवड़ियों के इस दौर में सरकारों ने अपनी प्राथमिक जिम्मेदारियों से पल्ला झाड़ लिया है। यह अपने आप में सबसे बड़ी चिंता का विषय है। लेकिन कभी न कभी तो इस देश के बड़े तबके खासतौर से लाभार्थी वर्ग के लोगों को आगे बढ़कर सरकारों से और राजनीतिक दलों से यह कहना ही होगा कि, आप हमें बेवकूफ बनाना बंद कीजिए। सरकारी स्कूलों एवं कॉलेजों की हालत ठीक कीजिए, सरकारी अस्पतालों की हालत ठीक कीजिए, अध्यापकों और डॉक्टरों की कमी को दूर कीजिए, बिना किसी भेदभाव के सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले सभी बच्चों के लिए मुफ्त शिक्षा और सरकारी अस्पतालों में जाने वाले सभी लोगों के लिए मुफ्त इलाज की व्यवस्था को हर कीमत पर और हर हाल में सुनिश्चित कीजिए।

अवैध संबंध बना रायपुर में मां-बेटी के मर्डर की वजह

पहले महिला की नस काटकर गला घोंटा, नाबालिग को मारकर लाश से किया रेप

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (एजेंसी)। रायपुर में डबल मर्डर केस में खुलासा हुआ है। मां और बेटी की हत्या अवैध संबंध के बाद ब्लैकमेलिंग की वजह से की गई। इस मामले में आरोपी ने पहले मां की नस काट कर उसका गला घोटा। फिर बेटी की भी गला घोटकर हत्या कर दी। इसके बाद नाबालिग की लाश के साथ रेप भी किया।

पुलिस ने मृतिका के पूर्व बॉयफ्रेंड और उसकी पत्नी को गिरफ्तार किया है। रायपुर एसएसपी डॉ. लाल उम्मेद सिंह से मिली जानकारी के मुताबिक, 31 दिसंबर को रायपुर के खमतराई इलाके में एक नाले में नाबालिग लड़की की लाश मिली। लड़की की उम्र करीब 14 साल थी।

पोस्टमार्टम रिपोर्ट में नाबालिग से रेप भी आया: 14 साल की लड़की की लाश मिलने के बाद पुलिस आसपास पता तलाशी करते हुए अगले दिन धनेली गांव में लड़की के घर पहुंची। पता चला कि, घर के अंदर ही उसकी मां हमीदा बेगम की लाश पड़ी थी। महिला के दोनों हाथ की नस कटी हुई थी आसपास खून बिखरा हुआ था।

डबल मर्डर केस में पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट में पता चला कि, हमीदा की हत्या हाथ की नस काटने के बाद गला दबाने से हुई । इसके अलावा नाबालिग बेटी की हत्या भी गला दबाकर आईं। लेकिन हत्यारे ने हत्या के बाद नाबालिग की लाश से रेप भी किया था। इसके बाद पुलिस ने अड़ोस-पड़ोस और रिश्तेदारों को मिलाकर करीब 50 से ज्यादा लोगों से पूछताछ की।

30 किलोमीटर इलाके में हजारों सीसीटीवी खंगाले: पूछताछ में पता चला कि, हमीदा के घर पर एक ऑटो वाला अक्सर आया जाया करता था। घटनास्थल के आसपास सीसीटीवी कैमरे नहीं होने और ब्लाइंड स्पॉट होने की वजह से पुलिस के लिए मुश्किल हो गई। जांच टीम ने 30 किलोमीटर के इलाके में हजारों सीसीटीवी कैमरे खंगाले। इसके बाद एक संदिग्ध ऑटो नंबर के आधार पर ऑटो चालक भरत दास दीवान को हिरासत में लिया गया।

ब्लैकमेलिंग से परेशान होकर की वारदात: आरोपी भरत दास ने शुरुआत में पुलिस को उलझाने का प्रयास किया लेकिन कड़ाई से पूछताछ पर उसने सच उगल दिया। ऑटो ड्राइवर भरत ने बताया कि यह हत्या उसने अपनी पत्नी अनीता लहरे के साथ मिलकर की है। आरोपी पहले हमीदा के घर के पास रहता था। उस दौरान हमीदा के साथ उसका अवैध संबंध बन गया। इसके बाद वह धनेली से शिवानंद नगर में शिफ्ट हो गया।

कुछ दिनों बाद हमीदा उसे शादी करने के लिए जबरदस्ती करने लगी। पैसों की मांग करने लगी, पैसे नहीं देने पर केस में फंसाने की धमकी देने लगी। इस बीच आरोपी एक दूसरी महिला अनीता के साथ रहने लगा था। उसने यह बात अनीता को बताई। तब दोनों ने मिलकर हमीदा को रास्ते से हटाने का प्लान बनाया।

नाबालिग लड़की को अपने घर लाया आरोपी: आरोपी हमीदा को मारने से पहले नाबालिग बेटी को किसी बहाने अपने घर शिवानंद नगर ले आया। अनीता के भी चार बच्चे हैं, जिसे उसने पहले ही गांव भेज दिया था। अब आरोपी 31 दिसंबर के शाम हमीदा के घर पहुंचा। उसने चाकू से हमीदा के दोनों हाथ की नस काट दी फिर उसने गला दबा दिया। फिर उसने लाश को कंबल से ढंक दिया।

मृतका की बच्ची को पता चला राज: आरोपी भरत हत्या करके वापस अपने घर लौटा और उसने अनीता को पूरी बात बताई। इस दौरान नाबालिग लड़की ने मां की हत्या की बात सुन ली। इस पर भरत और अनीता ने मिलकर 14 साल की लड़की का भी गला दबा दिया। भरत ने नाबालिग की लाश ठिकाने लगाने के बहाने दूसरे कमरे में ले गया और रेप भी किया।

इसके बाद नाबालिग की लाश को नाले में फेंक दिया। पुलिस ने आरोपियों के पास से हत्या में इस्तेमाल चाकू, ई-रिक्शा और दो मोबाइल फोन जब्त किया है। दोनों आरोपियों को जेल भेज दिया गया है। इस मामले में एंटी क्राइम यूनिट, धरसींवा थाना और सिलियारी चौकी प्रभारी को एसएसपी ने 10 हजार नगद इनाम देने की घोषणा की है।

पानी की टंकी के विवाद में महिला की हत्या

पिता-पुत्र समेत तीन को 5-5 साल की सजा, डंडे-पत्थर से ले ली थी जान

मीडिया ऑडीटर, जांजगीर-चांपा (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के जांजगीर-चांपा जिले के ग्राम ठनगन में पानी की टंकी से पाइपलाइन कनेक्शन को लेकर हुए विवाद में एक महिला की हत्या के मामले में कोर्ट ने तीन आरोपियों को दोषी करार देते हुए 5-5 साल की सजा सुनाई है।

यह घटना 31 मई 2023 की है, जब पीड़ित नारद चौहान बाजार से घर लौटा तो देखा कि आरोपी नान्हुदस महंत, शिवादास महंत और लक्ष्मीदास महंत उसकी पत्नी सविता बाई और माता सुरजा बाई से गाली-गलौज कर रहे थे। विवाद का कारण घर के सामने लगी पानी की टंकी का पाइपलाइन कनेक्शन था। जब पीड़ित परिवार ने इसका विरोध किया, तो तीनों आरोपियों ने मिलकर डंडों और पत्थरों से हमला कर दिया।

हमले में गंभीर रूप से घायल सुरजा बाई की हुई थी मौत: हमले में गंभीर रूप से घायल सुरजा बाई को पहले डभरा अस्पताल और फिर रायगढ़ के शासकीय अस्पताल में भर्ती कराया गया। 31 मई से 7 जून 2023 तक इलाज के बाद उन्हें डिस्चार्ज कर दिया गया, लेकिन 20 जून 2023 को उनकी मौत हो गई।

आरापियों को 5-5 साल की सजा: न्यायालय ने तीनों आरोपियों को भारतीय दंड संहिता की धारा 304 भाग 2/34 के तहत दोषी पाते हुए 5-5 वर्ष के सश्रम कारावास की सजा सुनाई। साथ ही धारा 323/34 के तहत 1-1 माह का अतिरिक्त कारावास भी दिया है। विशेष लोक अभियोजक एक्ट्रेसिटी एक्ट धीरज कुमार शुक्ला की पैरवी के बाद यह फैसला आया है।

न्यायालय ने तीनों आरोपियों को भारतीय दंड संहिता की धारा 304 भाग 2/34 के तहत दोषी ठहराते हुए 5-5 वर्ष की सश्रम कारावास की सजा सुनाई है। साथ ही, धारा 323/34 के तहत 1-1 महीने की अतिरिक्त जेल की सजा भी दी गई है। इस फैसले के लिए विशेष लोक अभियोजक धीरज कुमार शुक्ला ने पैरवी की।

जिला एवं सत्र न्यायाधीश शक्ति सिंह राजपूत ने पानी टंकी के पाइप कनेक्शन को लेकर हुए विवाद में डंडे और पत्थर से मारपीट करने के कारण सुरजा बाई की मौत के मामले में नान्हुदस महंत, शिवादास महंत और लक्ष्मीदास महंत को दोषी पाया है। न्यायालय ने तीनों दोषियों को भारतीय दंड संहिता की धारा 304 भाग 2/34 के तहत 5-5 वर्ष की सश्रम कारावास और धारा 323/34 के तहत 1-1 माह का अतिरिक्त सश्रम कारावास की सजा सुनाई है।

15 दिन से रखा पादरी का शव, सुप्रीम कोर्ट बोला-हिंदू आदिवासियों से अचानक कैसे आ रही आपत्तियां, राज्य से कब्रिस्तान का मांगा विवरण

मीडिया ऑडीटर, जगदलपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के बस्तर के एक पादरी के शव को दफनाने मामले में 22 जनवरी को सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई हुई। कोर्ट ने कहा कि सालों से किसी ने ईसाई और हिंदू आदिवासियों को एक साथ दफनाने पर आपत्ति नहीं जताई, तो अचानक हिंदू आदिवासियों की ओर से आपत्तियां कैसे आ रही हैं?

जस्टिस नागरत्ना ने टिप्पणी की कि तथाकथित ग्रामीणों की आपत्तियां एक नई घटना है। कोर्ट ने राज्य सरकार से कब्रिस्तान का विवरण मांगा है। संबंधित पक्षों से पादरी के शव दफनाने के मामले को सुलझाने के लिए कहा है।

जस्टिस बीवी नागरत्ना और सतीश चंद्र शर्मा की पीठ ने पादरी के बेटे रमेश बघेल की याचिका पर अपना फैसला सुरक्षित रख लिया है। बेटे ने हाईकोर्ट से याचिका खारिज होने के बाद 20 जनवरी को सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया था।

पादरी का शव 15 दिनों से मेडिकल कॉलेज के मॉर्च्युरी में रखा है। शव दफनाने को लेकर गांव में विवाद की स्थिति है। ग्रामीण शव नहीं दफनाने दे रहे हैं। ग्रामीणों का कहना है कि वह गांव में किसी ईसाई को दफन नहीं होने देंगे।

गांव में है कब्रिस्तान-याचिकाकर्ता के अधिवक्ता: याचिकाकर्ता रमेश बघेल के अधिवक्ता कॉलिन गोंजावेल्स ने कहा कि, याचिकाकर्ता के पैतृक गांव छिंदावाड़ा में ही ईसाइयों को दफनाने के लिए एक क्षेत्र निर्धारित है। गांव में वास्तविक रूप से चिह्नित जगह है। इसके अलावा उन्होंने तर्क दिया कि राज्य का यह दावा कि मूल गांव के बाहर एक कब्रिस्तान है।

ईसाइयों को उनकी जमीन में शवों को दफनाने की अनुमति नहीं देने का यह एक बहाना है। गोंजावेल्स ने कहा कि यह ईसाई समुदाय के लोगों के खिलाफ भेदभाव है, जिन्होंने अपनी मूल जनजाति/जाति से ईसाई धर्म अपना लिया है।

नगरीय निकाय/ त्रिस्तरीय पंचायत आम निर्वाचन 2024-25 हेतु शिकायत के लिए फोन एवं मोबाइल नंबर व ई-मेल आई.डी. जारी

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। नगरीय निकाय/त्रिस्तरीय पंचायत आम निर्वाचन 2024-25 हेतु शिकायत दर्ज कराने के लिए फोन नंबर, मोबाइल नंबर तथा ईमेल आई.डी. जारी किया गया है। चिरमिरी नगर पालिका निगम क्षेत्र के लिए फोन नंबर 96694-26099 तथा मनेंद्रगढ़, खड़गवां, भरतपुर, जनकपुर, झगराखांड, नई लेदरी, और खोंगापानी (पंचायत एवं नगरीय निकाय) के लिए फोन नंबर 6266773823 जारी किया गया है। कलेक्टर कार्यालय के कक्ष क्रमांक 33 को स्थानीय निर्वाचन कंट्रोल रूम बनाया गया है।

सीमेंट प्लांट से जहरीली गैस का रिसाव

38 से ज्यादा स्कूली बच्चों की बिगड़ी तबीयत, बेहोश होकर गिरे, कई करने लगे उल्टी

मीडिया ऑडीटर, बलौदाबाजार (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के बलौदाबाजार में श्री सीमेंट प्लांट से निकली जहरीली गैस से शासकीय हाई स्कूल खपराडीह के 38 से ज्यादा बच्चे बीमार हो गए। स्कूल में कई छात्र-छात्राएं अचानक बेहोश होने लगे, उन्हें चक्कर आने लगा और उल्टी जैसी शिकायतें हुईं। मामले की सूचना मिलते ही कलेक्टर दीपक सोनी, पुलिस अधीक्षक विजय अग्रवाल, मुख्य चिकित्सा और स्वास्थ्य अधिकारी डॉक्टर राजेश अवस्थी सहित बड़ी संख्या में पुलिस बल, स्वास्थ्यकर्मी मौके पर पहुंचे। यहां से बच्चों को इलाज के लिए सुहेला अस्पताल लाया गया।

जिला अस्पताल भी रेफर किए गए कुछ बच्चे: कुछ बच्चों की तबीयत बिगड़ने और ऑक्सीजन की कमी होने की वजह से उन्हें जिला अस्पताल भी रेफर किया गया। कुछ बच्चों को भाटापारा और सिमगा स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया है। जहां उनका इलाज जारी है। कलेक्टर दीपक सोनी ने कहा कि, श्री सीमेंट प्लांट की जांच की जा रही है। प्रदूषण विभाग सहित बाकी विभाग की अधिकारी मौके पर जांच कर रहे हैं। जरूरत पड़ी तो कंपनी को सील किया जाएगा।

वेस्ट प्लास्टिक, सल्फर को जलाकर ईंधन बनाया जाता है: जिला शिक्षा अधिकारी हिमांशु भारतीय ने कहा कि, गैस की वजह से बच्चे बीमार पड़े थे, जिन्हें इलाज के लिए लाया गया है। सीएमएचओ डॉ राजेश अवस्थी ने कहा कि, बच्चों के बीमार पड़ने पर तत्काल अस्पताल लाया गया। फिलहाल सभी बच्चों का इलाज जारी है। स्थानीय लोगों का आरोप है कि, फैक्ट्री में स्थित अल्टरनेटिव फ्यूल रिसोर्स (एआरएफ) प्लांट से निकल रही जहरीली गैस इसकी वजह है। यह प्लांट वेस्ट प्लास्टिक, सल्फर और अन्य कचरे को जलाकर ईंधन के रूप में प्रयोग करता है।

समय - सीमा की बैठक सम्पन्न

आदर्श आचरण संहिता का पालन अनिवार्य रूप से करने के दिये निर्देश

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। कलेक्टर डी. राहुल वेंकट ने समय सीमा की बैठक के दौरान 26 जनवरी 2025 को आयोजित होने वाले गणतंत्र दिवस समारोह की तैयारियों को लेकर सभी विभागों के अधिकारियों की बैठक ली। बैठक में अधिकारियों को निर्देशित किया गया कि मुख्यमंत्री छत्तीसगढ़ शासन के संदेश को समारोह स्थल पर उचित ढंग से प्रस्तुत किया जाए। समारोह स्थल पर चिकित्सा दल और उपचार की व्यवस्था सुनिश्चित करने के साथ-साथ आमा खेरवा ग्राउंड की साफ-सफाई, ट्रैक लाइटिंग, टेंट, कुर्सी, बेरिकेटिंग और लाइटिंग की व्यवस्था की जाए।

साथ ही दो सफेद टोपियां, एक सफेद छाता, माइक, राष्ट्रीय ध्वज, बांस-बल्ली के माध्यम से बेरिकेटिंग, जनसामान्य के लिए पेयजल हेतु पानी टैंकर/फायर ब्रिगेड की व्यवस्था, सजावट के लिए गमलों और साज-सज्जा की व्यवस्था की जाए। इसके साथ ही विद्युत की व्यवस्था, उद्घोषक की नियुक्ति, सफेद कबूतरों, गुब्बारों और बैंड की व्यवस्था सुनिश्चित करने के भी निर्देश दिए गए। आमंत्रण पत्र की छपाई और वितरण, प्रशस्ति पत्र की तैयारी, रंगोली, स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों/शहीद परिवारों के लिए लाने-ले जाने और रुकने की व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिये। इसके साथ ही कलेक्टर ने सभी तैयारियों के लिए नोडल अधिकारी नियुक्त करने के निर्देश दिए।

अपर-कलेक्टर के बेटे की डैम में डूबने से मौत

दिल्ली से छुट्टी मनाने आया था रायगढ़, स्पीकर निकालने पानी में उतरा, तभी गहराई में समाया

मीडिया ऑडीटर, रायगढ़ (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के रायगढ़ जिले के टीपाखोल डैम में बालोद के अपर कलेक्टर अजय लकड़ा के बेटे की डूबने की मौत हो गई। बताया जा रहा है कि युवक दिल्ली से छुट्टी मनाने के लिए रायगढ़ आया था। अपने 2 दोस्तों के साथ डैम घूमने गया था। मामला कोतरा रोड थाना क्षेत्र का है।

मिली जानकारी के मुताबिक अपर कलेक्टर के बेटे का नाम जॉय लकड़ा (25) है। वह दिल्ली में रहकर कॉलेज की पढ़ाई करता था। मंगलवार रात करीब साढ़े 8 बजे डैम में तीनों दोस्त ब्लूटूथ स्पीकर से गाना सुन रहे थे, तभी स्पीकर पानी में गिर गया। उसे निकालने के लिए जॉय पानी में उतरा था।

अपने दोस्त को नहीं बचा सके युवक: इस दौरान जॉय डूबने लगा। दोस्त नवशीश शिंदे और शिवाशिष शिंदे ने बचाने की कोशिश की, लेकिन नाकाम रहे। जॉय को और उसके दोनों दोस्तों को भी तैरना नहीं आता था। दोस्तों ने तत्काल कोतरा रोड पुलिस को जानकारी दी। पुलिस अपनी टीम के साथ मौके पर पहुंची।

सुबह 3 बजे तक चला रेस्क्यू ऑपरेशन: जिला कमांडेट ब्लासियुज कुजूर ने बताया कि रात में करीब साढ़े 10 बजे रेस्क्यू ऑपरेशन शुरू किया गया, जो सुबह 3 बजे तक रेस्क्यू चला, लेकिन जॉय का कुछ पता नहीं चला। इसके बाद फिर सुबह 6 बजे से रेस्क्यू ऑपरेशन शुरू किया गया। करीब 1 घंटे के बाद वह जहां गिरा था, वहीं गहराई में उसकी डेडबॉडी मिली।

लाश को पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा गया: कोतरा रोड थाना प्रभारी त्रिनाथ त्रिपाठी ने बताया कि मृतक के पिता बालोद में अपर कलेक्टर हैं। वहीं जॉय की मां अनिता लकड़ा जिंदल स्कूल में शिक्षिका हैं। डेडबॉडी मिलने के बाद लाश को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया गया है। मामले की जांच की जा रही है।

डैम में पहले भी हो चुका हादसा: बता दें कि 1 जनवरी को भी टीपाखोल में एक हादसा हुआ था, जिसमें डैम में वोटिंग के दौरान तेज रफ्तार नाव बेकाबू होकर पलट गई थी। नाव में बैठे पति-पत्नी और उनका बच्चा गिर गया था, लेकिन लाइफ जैकेट पहने होने के कारण वह बाल बाल बच गए थे। बाद में दूसरी नाव से सुरक्षित किनारे लाया गया था।

निकाय चुनाव के लिए आज से नामांकन

25 लाख खर्च कर सकेंगे मेयर पद के उम्मीदवार, पंचायतों में बैलेट पेपर से होगा चुनाव

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (एजेंसी)। बिलासपुर में नगरीय निकाय चुनाव के लिए नामांकन की प्रक्रिया आज यानी 22 जनवरी से शुरू हो रही है। इसके साथ ही जिले के 7 नगरीय निकायों के लिए नामांकन लेने का काम शुरू हो जाएगा। जिला प्रशासन द्वारा इसके लिए सभी तैयारियां पूरी कर ली गई है। नामांकन सुबह 10.30 बजे दोपहर 3 बजे तक होगा। इस दौरान पार्षद, महापौर और अध्यक्ष पदों के लिए नामांकन लिए जाएंगे। इस बार चुनाव में मेयर पद के दावेदार अधिकतम 25 लाख रुपए खर्च कर सकेंगे। वहीं, पंचायतों में चुनाव बैलेट पेपर से होगा।

नाम निर्देशन पत्र जमा करने नामांकन पत्रों की जांच एवं चुनाव चिन्ह आवंटन के लिए अलग-अलग रिटर्निंग आफिसर नियुक्त किए गए हैं। जिला कार्यालय के अलग-अलग 8 कमरों में नाम निर्देशन पत्र जमा करने एवं नामांकन पत्रों की जांच और चुनाव चिन्ह के वितरण करने के लिए व्यवस्था की है।

इसी प्रकार तहसील कार्यालय, नगर पालिका और नगर पंचायत कार्यालय में भी नामांकन लेने की व्यवस्था की गई है। महापौर के लिए जिला कार्यालय के कक्ष क्रमांक 50, न्यायालय अतिरिक्त कलेक्टर प्रथम तल में नाम निर्देशन पत्र लिए जाएंगे।

वार्ड क्रमांक 1 और 10 के लिए नामांकन न्यायालय सिटी मजिस्ट्रेट 1 के कक्ष क्रमांक 25 में, वार्ड क्रमांक 11 से 20 तक के नामांकन न्यायालय सिटी मजिस्ट्रेट 2 के कक्ष क्रमांक 35, वार्ड क्रमांक 21 से 30 तक के नामांकन राहत शाखा कक्ष क्रमांक 51, वार्ड क्रमांक 31 से 40 तक न्यायालय भाड़ा नियंत्रण कक्ष क्रमांक 26, वार्ड क्रमांक 41 से 50 तक भू-अभिलेख शाखा कक्ष क्रमांक 44, वार्ड क्रमांक 51 से 60 तक भू-अभिलेख शाखा कक्ष क्रमांक 46, वार्ड क्रमांक 61 से 70 तक के प्रत्याशी नजूल शाखा कक्ष क्रमांक 38 में अपना नामांकन दाखिल कर सकेंगे।

यही पर नामांकन पत्रों की जांच तथा चुनाव चिन्ह का वितरण भी किया जाएगा। इसी प्रकार तखतपुर नगर पालिका परिषद के अध्यक्ष और पार्षद के लिए नामांकन तहसील कार्यालय तखतपुर के कक्ष क्रमांक 2, रतनपुर में तहसील कार्यालय रतनपुर और नगर पालिका परिषद बोदरी में नामांकन नगर पालिका परिषद कार्यालय बोदरी, नगर पंचायत कोटा में अध्यक्ष और पार्षद पद के लिए नामांकन तहसील कार्यालय कोटा में की जाएगी।

नगर पंचायत बिल्हा के लिए तहसील कार्यालय बिल्हा के कक्ष क्रमांक 3 और नगर पंचायत मल्हार के अध्यक्ष एवं पार्षद पद के लिए नामांकन नगर पंचायत मल्हार कार्यालय के कक्ष क्रमांक 3 में लिए जाएंगे। जिला प्रशासन द्वारा कलेक्टोरेट के सामने दोनों ओर बैरिकेड्स लगाए गये हैं और सुरक्षा व्यवस्था के पुख्ता इंतजाम किए गए हैं।

प्रत्याशियों के लिए खर्च की सीमा तय, पंचायतों में बैलेट पेपर से चुनाव: वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार जनसंख्या 5 लाख से अधिक है, वहां मेयर के लिए होने वाले चुनाव में प्रत्याशियों के लिए अधिकतम 25 लाख रुपए खर्च किए जा सकेंगे। ऐसे निगम जहां की जनसंख्या वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार 3 लाख से 5 लाख तक है, वहां मेयर प्रत्याशी अधिकतम 20 लाख रुपए तक खर्च कर सकेंगे।

3 लाख से कम जनसंख्या वाली निगम में यह राशि 15 लाख रुपए प्रस्तावित की गई है। इसी तरह नगर पालिका परिषद में अध्यक्ष के चुनाव में जहां जनसंख्या 50 हजार या उससे ऊपर है, वहां 10 लाख और जहां 50 हजार से कम है, वहां 8 लाख रुपए खर्च के लिए प्रस्तावित है।

इसी तरह नगर पंचायतों में अध्यक्ष के चुनाव में खर्च के लिए अधिकतम 6 लाख रुपए प्रस्तावित है। फर्जी मतदान को रोकने के लिए जिला निर्वाचन ने 18 पहचान पत्र तय किए हैं। इसी तरह नगरीय निकाय में मतदाता नोटा विकल्प का भी उपयोग कर सकेंगे। वहीं पंचायतों में होने वाला चुनाव ईवीएम से नहीं बल्कि बैलेट पेपर से होगा।

होटल में फटा सिलेंडर, 3 कर्मचारी समेत 5 झुलसे

हालत गंभीर, नाश्ता करते समय हुआ हादसा, बाइक और स्कूटी भी जलकर राख

मीडिया ऑडीटर, रायगढ़ (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के रायगढ़ में बुधवार दोपहर रोड किनारे एक होटल में एकाएक सिलेंडर के फटने से 5 लोग झुलस गए। जानकारी के मुताबिक ढिमरापुर रोड पर जय समोसा कॉर्नर नाम से नाश्ते की दुकान है। आज दोपहर नाश्ता करने वाले लोगों की भीड़ लगी थी। तभी एकाएक वहां का गैस सिलेंडर फट गया। इससे उस होटल में काम करने वाले सुंदर लाल यादव (47), नान बाई लकड़ा (60) और रहमातुल्ला (40) और 2 अन्य ग्राहक आग की चपेट में आ गए। सभी घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

इसके अलावा आग से होटल के सामने खड़ी एक बाइक और स्कूटी भी जलकर राख हो गई। मामला कोतवाली थाना क्षेत्र की है। आग लगने से होटल में अफरा-तफरी मच गई। आसपास के लोगों ने मामले की सूचना कोतवाली थाना और दमकल विभाग में दी। ऐसे में तत्काल पुलिस की पेट्रोलिंग पार्टी और दमकल वाहन मौके पर पहुंचकर आग को बुझाने का प्रयास शुरू किया। बताया जा रहा है कि करीब आधे घंटे की मशक्कत के बाद आग को बुझा लिया गया। इसके बाद दो घायलों को निजी अस्पताल और होटल में काम करने वाले 3 लोगों को जिला अस्पताल में इलाज के लिए भर्ती कराया गया है।

दो वाहन भी आग की चपेट में आए: सिलेंडर के फटने के बाद होटल के बाहर खड़ी एक स्कूटी और बाइक भी आग की चपेट में आ गए। इससे वे भी जलने लगे। जिसे भी बुझाया गया। घटना के बाद आसपास के लोगों की काफी संख्या में यहां भीड़ जमा हो गई थी।

पुलिस बोली- 2 के झुलसने की मिली सूचना: इस संबंध में कोतवाली थाना प्रभारी सुखनंदन ने बताया कि अभी 2 लोगों के झुलसने की खबर है। होटल के सिलेंडर के फटने से आग लग गई थी। सूचना मिलने के बाद पेट्रोलिंग और दमकल वाहन पहुंची और तत्काल आग को बुझा लिया गया है। मामले में अभी आगे की जांच चल रही है।

जद-यू ने मणिपुर की भाजपा सरकार से समर्थन वापस लिया

इंफाल (एजेंसी)। मणिपुर में भाजपा के नेतृत्व वाली सरकार से नीतीश कुमार की जेडीयू ने समर्थन वापस लिया है। पार्टी का एकमात्र विधायक अब विपक्ष में बैठेगा। हालांकि इससे सीएम बीरेन सिंह की सरकार पर असर नहीं पड़ेगा। नवंबर 2024 में भाजपा सरकार में शामिल नेशनल पीपुल्स पार्टी ने समर्थन वापसी का ऐलान किया था। 60 सदस्यों वाली मणिपुर विधानसभा में एनपीपी के 7 सदस्य हैं, जो भाजपा सरकार को समर्थन दे रहे थे। भाजपा के पास 32 सदस्य हैं, जबकि बहुमत का आंकड़ा 31 हैं। ऐसे में सरकार को फिलहाल खतरा नहीं है। जेडीयू ने कहा- इस समर्थन वापसी के बावजूद केंद्र और बिहार में एनडीए गठबंधन चलता रहेगा।

कलकत्ता हाईकोर्ट डॉक्टर रेप-मर्डर के दोषी, विक्टिम फैमिली को सुनेगा

कोलकाता (एजेंसी)। आरजी कर रेप-मर्डर केस में दोषी संजय रॉय की सजा के खिलाफ बंगाल सरकार की अपील पर फैसला करने से पहले कलकत्ता हाईकोर्ट दोषी संजय, पीड़ित परिवार और सीबीआई को सुनेगा। बुधवार को हाईकोर्ट ने कहा कि बंगाल सरकार की याचिका मंजूर करने से पहले हम इन पक्षों की बात सुनेंगे। सुनवाई 27 जनवरी को होगी। बंगाल सरकार ने अपील में कहा था कि संजय रॉय ने जो अपराध किया है, उसके लिए उम्रकैद पर्याप्त नहीं है। उसे फांसी दी जानी चाहिए। सियालदह कोर्ट ने 20 जनवरी को संजय को मरते दम तक उम्रकैद की सजा सुनाई थी। जस्टिस अनिर्बान दास ने कहा था कि यह मामला रेयरेस्ट ऑफ रेयर कैटेगरी में नहीं आता, इसलिए फांसी की सजा नहीं दी गई है। सीबीआई ने बंगाल सरकार की याचिका का विरोध किया हाईकोर्ट में जस्टिस देबांगशु बसक और जस्टिस मो. शब्बार राशिदी की बेंच के सामने सीबीआई के वकील ने बंगाल सरकार के याचिका दाखिल करने के अधिकार का विरोध किया। सीबीआई के डिप्टी सॉलिसिटर जनरल राजदीप मजूमदार ने कहा कि बंगाल सरकार के पास याचिका दाखिल करने का अधिकार नहीं है। उन्होंने दावा किया कि जांच एजेंसी सीबीआईथी, एजेंसी के पास ही यह अधिकार है कि वो सजा पर्याप्त न होने के आधार पर याचिका दाखिल करे। सीबीआई ने ट्रायल कोर्ट के सामने भी फांसी की सजा देने की अपील की थी। बंगाल सरकार बोली- शुरुआती जांच कोलकाता पुलिस ने की बंगाल सरकार के एडवोकेट जनरल किशोर दत्त ने कहा कि प्रॉसिक्यूशन एजेंसी, फैमिली, दोषी के अलावा राज्य भी सजा को लेकर अपील कर सकता है। उन्होंने कहा कि शुरुआत में कोलकाता पुलिस केस की जांच कर रही थी। 13 अगस्त 2024 को यह केस सीबीआई को सौंपा गया।

दिल्ली दंगों के आरोपी की जमानत पर जज बंटे

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली दंगों के आरोपी और विधानसभा चुनाव मेंताहिर हुसैन की जमानत याचिका पर सुप्रीम कोर्ट की दो जजों की बेंच में सहमति नहीं बन सकी। बुधवार को हुई सुनवाई में जस्टिस अहसानुद्दीन अमानुल्लाह ताहिर को जमानत देने के पक्ष में थे, जबकि जस्टिस पंकज मित्तल ने याचिका खारिज कर दी। सीजेआई संजीव खन्ना 3 जज की नई बेंच बनाएंगे। जस्टिस मित्तल ने कहा कि अगर चुनाव लड़ने के लिए अंतरिम जमानत देने से भानुमती का पिटारा खुल जाएगा। पूरे साल चुनाव होते हैं। हर कैदी दलील लेकर आएगा कि उसे चुनाव लड़ने के लिए जमानत दी जाए। जस्टिस अहसानुद्दीन अमानुल्लाह ने कहा कि आरोपी मार्च 2020 से जेल में है। उसे प्रचार के लिए जमानत देनी चाहिए।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव गुरुवार को भोपाल के सबसे बड़े नव निर्मित फ्लाई-ओवर का करेंगे उद्घाटन

भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, गुरवार 23 जनवरी को गायत्री मंदिर से गणेश मंदिर के बीच 154 करोड़ रूपये की लागत से नव निर्मित भोपाल के सबसे बड़े फ्लाई-ओवर का उद्घाटन करेंगे। यह फ्लाई-ओवर शहर के यातायात प्रबंधन में महती सुधार लाने में सहायक होगा। साथ ही यात्रियों को राहत प्रदान करेगा। समारोह में लोक निर्माण मंत्री श्री राकेश सिंह भी उपस्थित रहेंगे।

भोपाल शहर में मैदा मिल मार्ग पर गायत्री मंदिर से डीबी मॉल चौराहा, बोर्ड ऑफिस चौराहा, प्रगति चौराहा से मानसरोवर कॉम्प्लेक्स होते हुए गणेश मंदिर तक निर्मित फ्लाई-ओवर 2900 मीटर लंबा और 15 मीटर चौड़ा है। यह मैदा मिल मार्ग को विद्या नगर, शक्ति नगर, कस्तूरबा नगर, साकेत नगर, दानिश नगर, आशिमा मॉल और एम्स जैसे प्रमुख रिहायशी और वाणिज्यिक क्षेत्रों से जोड़ता है। इसके अलावा, औबेदुल्लागंज, नर्मदापुरम, बैतूल, खंडवा और जबलपुर की ओर जाने वाले यात्रियों के लिए भी यह मार्ग को सुगम बनाएगा।

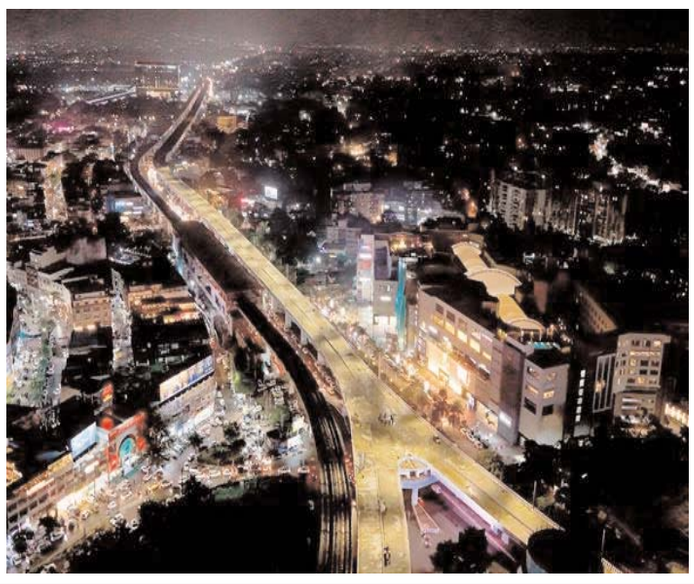

यह फ्लाई-ओवर डी.बी. मॉल, बोर्ड ऑफिस, प्रगति पेट्रोल पंप और मानसरोवर चौराहे जैसे भीड़-भाड़ वाले क्षेत्रों पर यातायात का दबाव कम करेगा। प्रारंभिक आंकलन के अनुसार 60त्न यातायात इस फ्लाई-ओवर से गुजरेगा, जबकि शेष 40त्न यातायात पुराने मार्गों का उपयोग करेगा।

फ्लाई-ओवर की एक शाखा डी.बी. मॉल चौराहे से भोपाल हाट (मंत्रालय मार्ग) की ओर जाती है, जिससे वल्लभ भवन तथा अरेरा हिल्स पर स्थित समस्त राज्य स्तरीय कार्यालयों में कार्य करने वाले कर्मचारियों को पीक आर्वस में लगने वाले जाम से राहत मिलेगी। यातायात सुगम हो जाने से नागरिकों को अपने गंतव्य स्थान तक पहुँचने में समय की बचत होगी और वाहन प्रदूषण में भी कमी आयेगी, जिससे भोपाल शहर के नागरिकों को राहत मिलेगी।

डल्लेवाल के इलाज से डॉक्टरों का इनकार

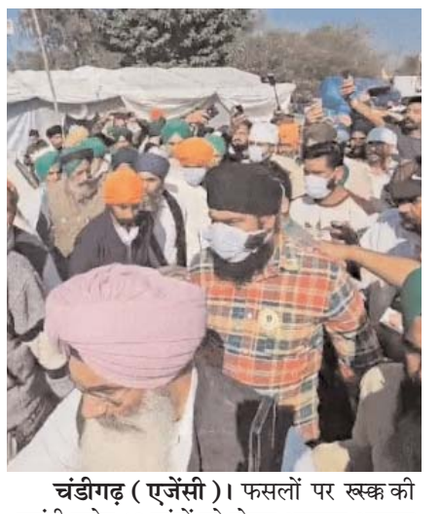

चंडीगढ़ (एजेंसी)। फसलों पर एमएसपी की गारंटी समेत 13 मांगों को लेकर आमरण अनशन पर बैठे किसान नेता जगजीत सिंह डल्लेवाल का इलाज करने से राजिंद्रा अस्पताल के डॉक्टरों ने इनकार कर दिया है। डॉक्टरों ने मेडिकल सुपरिटेंडेंट को एक पत्र लिखा है, जिसमें उन्होंने किसानों के रवैये को लेकर एतराज जताया है। हालांकि, अभी भी राजिंद्रा अस्पताल के डॉक्टरों की टीम डल्लेवाल की सेहत पर नजर बनाए हुए है। वहीं, किसान नेता अभिमन्यु कोहाड़ ने बताया कि बीती रात को डल्लेवाल को ड्रिप देने में चूक हुई। उन्होंने कहा कि ड्रिप खत्म करने का तय समय होता है। लेकिन बाती रात को ड्यूटी पर तैनात डॉक्टर ने इसकी रफ्तार तेज कर दी। इससे डल्लेवाल के हाथ में सूजन आ गई। उस समय वहां पर सीनियर डॉक्टर भी मौजूद नहीं थी। कोहाड़ का दावा है की चिट्ठी के बहाने डॉक्टरों की टीम अपनी गलती छिपाने की कोशिश कर रही है। वहीं, डल्लेवाल की सेहत को लेकर आज सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई हुई। इसमें पंजाब सरकार का पक्ष लेकर पहुंचे एडवोकेट जनरल गुरमिंदर सिंह ने बताया कि केस में कई सकारात्मक सुधार हुए हैं। पंजाब सरकार की तरफ से पहुंचे एडवोकेट जनरल गुरमिंदर सिंह? ने अदालत को बताया कि 18 जनवरी को केंद्र ने अपने प्रतिनिधि भेजे थे।

उन्होंने 14 फरवरी को किसानों के साथ मीटिंग निर्धारित की है। इसके बाद डल्लेवाल और अन्य किसानों ने भी चिकित्सा सहायता लेना शुरू कर दिया है। चिकित्सा सहायता के बाद उनकी सेहत में सुधार हुआ है।

जम्मू-कश्मीर में बर्फबारी से सड़कें बंद

जम्मू/नई दिल्ली (एजेंसी)। देश के पहाड़ी राज्यों जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश में लगातार तीसरे दिन बर्फबारी हुई। मौसम विभाग के अनुसार हिमाचल के हंसा में 2.5 सेमी, जबकि काजा सहित अन्य इलाकों में भी 5 से 6 सेमी बर्फबारी हुई। यहां बुधवार को भी बर्फबारी की संभावना है। कुकमसेरी में रात का तापमान -5.6 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। जम्मू-कश्मीर के गुलमर्ग, सोनमर्ग, जोजिला पास जैसे ऊंचे इलाकों में मंगलवार को हुई बर्फबारी के कारण गुरेज-बांदीपुरा रोड, सेमथान-किश्तवाड़, मुगल रोड बंद हो गए। यहां बर्फ हटाने का काम जारी है।

एमपी-यूपी समेत 12 राज्यों में कोहरे का अलर्ट है। यूपी के 40 जिलों में घना कोहरा भी देखने को मिला है। विजिबिलिटी 100 मीटर तक घट गई। सर्द हवाओं के कारण यहां ठंड का असर भी बना हुआ है। फतेहपुर राज्य में सबसे ठंडा जिला रहा। यहां का तापमान 7.2 डिग्री

सेल्सियस दर्ज किया गया।

मौसम विभाग ने कहा कि मध्य प्रदेश में हवा का रुख बदलने से दिन में तापमान बढ़ रहा है, लेकिन रात में ठंड का असर बरकरार है। भोपाल, मंडला, पचमढ़ी, राजगढ़, उमरिया, नौगांव जैसे शहरों में पारा 10ए से नीचे ही चल रहा है। मध्य प्रदेश के ग्वालियर-चंबल में हल्की बारिश हो सकती है।

दिल्ली में मोदी की 3, योगी की 14 सभाएं, राहुल गांधी 22 से 24 जनवरी तक तीन रैलियां करेंगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली विधानसभा चुनाव के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 3 और उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ 14 जनसभाओं को संबोधित करेंगे। प्रधानमंत्री मोदी 29 जनवरी, 31 जनवरी और 2 फरवरी को अलग-अलग इलाकों में रैली करेंगे। वहीं योगी आदित्यनाथ 23 जनवरी से अपनी रैलियों की शुरुआत करेंगे। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी कांग्रेस की ओर से अकेले मोर्चा संभाले हुए हैं। उन्होंने 12 जनवरी को सीलमपुर में पहली रैली की थी। इसके बाद वे 22 जनवरी को सदर बाजार, 23 जनवरी को मुस्तफाबाद और 24 जनवरी को मादीपुर में रैलियां करेंगे।

दिल्ली में चुनाव की तारीखों का ऐलान हो चुका है। 5 फरवरी को सभी 70 सीटों पर वोटिंग होगी।

वहीं, 8 फरवरी को नतीजे घोषित किए जाएंगे। दिल्ली विधानसभा का मौजूदा कार्यकाल 23 फरवरी को खत्म हो रहा है। आप के नई दिल्ली सीट से उम्मीदवार अरविंद केजरीवाल ने कहा- मैं 10 साल पहले आपसे मिलने आया था। उस समय बिजली 8 घंटे आती थी। अब 24 घंटे बिजली आती है। न तो बिजली कटती है और न ही जनरेटर की जरूरत पड़ती है।

20 राज्यों में बीजेपी की सरकार है। इनमें से किसी भी राज्य में 24 घंटे बिजली नहीं आती।

जवान ने कहा-हम लोग मारते गए, डेडबॉडी का हिसाब नहीं

गरियाबंद (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के गरियाबंद में नक्सलियों के खिलाफ सबसे लंबा ऑपरेशन चल रहा है। 3 दिन से कुल्हाड़ी घाट स्थित भालू डिग्गी के जंगल में रुक-रुककर फायरिंग हो रही है। फोर्स के मुताबिक 1 करोड़ का इनामी सीसीएम मेंबर बालकृष्ण 25 साथियों के साथ छिपा है। 27 नक्सलियों के मारे जाने की खबर है। इससे पहले बुधवार सुबह 14 नक्सलियों के शव पोस्टमॉर्टम के लिए रायपुर के मेकाहारा लाए गए। इनमें 6 महिला और 8 पुरुष हैं। मौके पर दैनिक भास्कर के संवाददाता से एक जवान ने भी बात की। कोबरा जवान ने कहा कि, डेडबॉडी का हिसाब नहीं है, हम लोग मारते गए हैं पीछे एक टीम डेडबॉडी रिकवर कर रही है। वहीं दूसरी तरफ सुरक्षाबलों के ऑपरेशन से घबराकर नारायणपुर में 8 नक्सलियों ने सरेंडर किया है। सरेंडर किए नक्सलियों को 25000 रुपए की चेक भी दिया गया।

जम्मू-कश्मीर के बधाल में रहस्यमयी बीमारी से 17 मौतें

राजौरी (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के राजौरी के गांव बधाल को कंटेनमेंट जोन बनाया गया है। यहां रहस्यमयी बीमारी से 44 दिनों में 3 परिवारों के 17 लोगों की मौत के बाद बुधवार को यह फैसला लिया गया। यहां अब भीड़ इकट्ठा होने पर रोक लगा दी गई है। मंगलवार को एक और बुधवार को दो मरीज और सामने आए। उन्हें इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। मंगलवार को 25 साल के युवक एजाज अहमद की तबीयत बिगड़ी थी। पहले उसे जीएमसी जम्मू लाया गया था। फिर पीजीआई चंडीगढ़ रेफर किया गया। गांव में हुई मौतों की वजह अभी सामने नहीं आई है।

गांव में 7 दिसंबर से 19 जनवरी के बीच संदिग्ध परिस्थितियों में ये मौतें हुई हैं। मंगलवार को मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला गांव में निरीक्षण के लिए पहुंचे थे। इसके बाद प्रशासन ने गांव को कंटेनमेंट जोन बनाने का फैसला लिया।

पहला जोन उन परिवारों को कवर कर रहा है, जिनमें मौतें हुई हैं। इन परिवारों के घरों को सील कर दिया गया है और सभी लोगों के लिए यहां पर एंट्री बैन कर दी गई है।

परिवार वालों को भी यहां जाने की अनुमति नहीं दी जा रही है। उन्हें यहां जाने के लिए अधिकारियों की मंजूरी लेनी होगी।

सैफ अली खान के घर बयान दर्ज करने पहुंची पुलिस

मुंबई (एजेंसी)। 15 जनवरी की रात हमले में घायल होने के बाद एक्टर सैफ अली खान ऑटो से लीलावती अस्पताल पहुंचे थे। 21 जनवरी को अस्पताल से डिस्चार्ज होने के बाद उन्होंने उसी ऑटो ड्राइवर भजन सिंह से मुलाकात कर शुक्रिया कहा। सैफ की मां शर्मिला ने भी सैफ को समय रहते अस्पताल पहुंचाने के लिए शुक्रिया कहा। इधर, हमले के 6 दिन बाद बांद्रा पुलिस सैफ अली खान का बयान दर्ज करने उनके घर पहुंची है। मुंबई पुलिस ने आरोपी शरीफुल को 19 जनवरी की देर रात गिरफ्तार किया था। इस केस की जांच अब सुदर्शन गायकवाड़ की जगह अजय लिंगनुरकर को सौंपी गई है। आईओ को हटाने की वजह नहीं बताई गई है। मुंबई पुलिस ने मंगलवार सुबह और देर रात क्राइम सीन रीक्रिएट किया था। पुलिस आरोपी शरीफुल इस्लाम को सैफ के घर से करीब 500 मीटर दूर ले गई। पुलिस ने बताया कि आरोपी बाथरूम की खिड़की से ही सैफ के घर में घुसा था और हमले के बाद यहीं से बाहर भी निकला।

मोदी बोले-हार के डर से आपदा वाले घोषणाएं कर रहे

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दिल्ली भाजपा के कार्यकर्ताओं से कहा- दिल्ली की जनता आपदा का का खेल जान गई है। उनकी पोल खुल गई है।

भाजपा की जीत पक्की करने के लिए दिल्ली की जनता निकल पड़ी है। हार के डर से आपदा वाले रोज-रोज नई-नई घोषणा करते हैं। वे नारे लगाते हुए कहते हैं कि फिर आएंगे, फिर आएंगे, लेकिन जनता कहती है कि फिर खाएंगे, फिर खाएंगे।

उन्होंने नमो ऐप के जरिए कार्यकर्ताओं से बात करते हुए कह- 5 फरवरी को ज्यादा से ज्यादा संख्या में लोगों को पोलिंग बूथ तक पहुंचाना है। ठंड कितनी भी हो, हमें सुबह से ही मतदान की तीव्रता को पहुंचाना है। दिल्ली को आम आदमी पार्टी ने संकट में डाला हुआ है।

दिल्ली को आपदा से मुक्त कराना है। ऐसा होगा, तभी दिल्ली को विकसित भारत की

विकसित राजधानी बनाने का संकल्प सिद्ध होगा। मोदी ने कहा कि आप भी जानते हैं कि जिनको किसी ने नहीं पूछा, उनको मोदी पूजता है। बीते 10 वर्षों में गरीब से गरीब को भी पक्का घर,मुफ्त अनाज, मुफ्त इलाज जैसी सुविधाएं पहली बार मिली। झुग्गी में रहने वाले साथियों को भाजपा सरकार बड़ी संख्या में पक्के घर दे रही है। आप टीम लीडर हैं, मेहनती हैं तो जरूर लोगों से बातचीत होती होगी। क्या अनुभव रहा।

केजरीवाल बोले- मिडिल क्लास टैक्स टेररिज्म का शिकार

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री और आप संयोजक अरविंद केजरीवाल ने बुधवार को मिडिल क्लास के लिए मेनिफेस्टो जारी किया। एक्स पर शेयर एक वीडियो में उन्होंने कहा कि केंद्र में एक के बाद एक सरकारें आईं, लेकिन किसी ने मिडिल क्लास के लिए कुछ नहीं किया। सभी ने मिडिल क्लास को डराकर दबाकर रखा। केजरीवाल ने कहा कि मिडिल क्लास टैक्स टेररिज्म का शिकार हो गया है। जब सरकार को जरूरत पड़ती है, तो टैक्स का हथियार चला देती है। बदले में मिडिल क्लास को कुछ नहीं मिलता है। मिडिल क्लास सरकार का एटीएम बनकर रह गया है। आज पहली बार एक पार्टी मिडिल क्लास के लिए मेनिफेस्टो जारी कर रही है। इस वीडियो में केजरीवाल ने कहा कि वे और आम आदमी पार्टी सड़क से लेकर संसद तक मिडिल क्लास की आवाज उठाएंगे। बजट सत्र में हमारे सांसद मिडिल क्लास के लिए सात मांग करेंगे। इन मांगों में इनकम टैक्स की छूट 7 लाख से बढ़ाकर 10 लाख करने और शिक्षा-स्वास्थ्य का बजट बढ़ाने की मांगें शामिल हैं।

करो या मरो वरना... इस भारतीय स्टार खिलाड़ी को पूर्व क्रिकेटर ने दी चेतावनी

नई दिल्ली (एजेंसी)। 22 जनवरी से कोलकाता के ईडन गार्डन्स स्टेडियम में भारत और इंग्लैंड के बीच 5 मैचों की टी20 सीरीज का आगाज होगा। विराट कोहली और रोहित शर्मा के टी20 रिटायरमेंट के बाद टीम इंडिया मैनेजमेंट एक नई टी20 टीम तैयार करने में जुटा है। क्रिकेट के इस छोटे फॉर्मेट में अभिषेक शर्मा उन खिलाड़ियों में से एक हैं, जिन्हें टॉप ऑर्डर में लगातार मौके मिलते रहे हैं। लेकिन वो हाल के दिनों में अपने प्रदर्शन में निरंतरता लाने में असफल रहे हैं। अभिषेक के पास मैदान के चारों ओर शॉट्स लगाने की काबिलियत है और उन्होंने जुलाई 2024 में जिम्बाब्वे के खिलाफ केवल 47 गेंद में शतक जड़ा था। अब भारत के पूर्व क्रिकेटर आकाश चोपड़ा ने अभिषेक को इंग्लैंड के खिलाफ मुकाबले से पहले चेतावनी दी है। दरअसल, आकाश चोपड़ा ने अभिषेक शर्मा की फॉर्म पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि, अभिषेक की फॉर्म में उतार-चढ़ाव देखने को मिले हैं। अपने करियर के दूसरे टी20 मैच में ही उन्होंने जिम्बाब्वे के खिलाफ शतक लगाया था। उनमें टैलेंट भरा हुआ है, लेकिन प्रदर्शन में निखार नहीं आया है। मुझे लगता है कि ये उनके लिए आखिरी मौका है वो अच्छा करते हैं तो ये बढ़िया बात होगी।

पूर्व क्रिकेटर ने युजवेंद्र चहल को लेकर बीसीसीआई और टीम मैनेजमेंट पर लगाए आरोप

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी 2025 के लिए टीम इंडिया का ऐलान होने के कई दिनों के बाद भी इस चर्चा जारी है। कोई करुण नायर तो कई संजू सैमसन और मोहम्मद सिराज के टीम में ना होने को लेकर चितिंत है तो कोई सूर्यकुमार यादव को टीम में शामिल ना किए जाने से नाराज है। इस बीच अब युजवेंद्र चहल को लेकर एक बयान सामने आया है, जिसमें पूर्व क्रिकेटर और मौजूदा कमेंटेटर आकाश चोपड़ा ने कहा है कि बीसीसीआई और टीम मैनेजमेंट ने चहल का इंडिया का करियर तबाह कर दिया। आकाश चोपड़ा ने कहा है कि बिना किसी कारण के युजवेंद्र चहल का करियर खत्म कर दिया गया, यहां तक कि दो साल पहले टीम से ड्रॉप होने से पहले उनका रिकॉर्ड हृष्टद्ध क्रिकेट में दमदार था। अपने यूट्यूब चैनल पर बात करते हुए आकाश चोपड़ा ने इंडिया की वनडे टीम को लेकर बात की और कहा कि खराब प्रदर्शन ना करने के बावजूद युजवेंद्र चहल को बाहर कर दिया गया।

पूर्व क्रिकेटर ने कहा कि, युजवेंद्र चहल पूरी तरह से फिनिश हो चुके हैं। उनकी फाइल बंद कर दी गई है। मुझे नहीं पता कि उन्होंने ऐसा क्यों किया? ये एक दिलचस्प मामला है। उन्होंने आखिरी बार जनवरी 2023 में खेला था। इसलिए उन्हें दो साल हो गए हैं। उनके आंकड़े भी बहुत अच्छे हैं।

कोलकाता में भारत और इंग्लैंड के बीच भिड़ंत

नई दिल्ली (एजेंसी)। टीम इंडिया और इंग्लैंड टीम कोलकाता के ईडन गार्डन्स में पहले टी20 मैच के लिए भिड़ेंगे। इस सीरीज में सबकी नजरें तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी पर होगी जो लंबे समय बाद टीम इंडिया में वापसी करने वाले हैं। स्टार तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह की कमर में चोट होने से चैंपियंस ट्रॉपी में उनका खेलना तय नहीं है जिससे शमी पर काफी दारोमदार होगा। ईडन गार्डन्स स्टेडियम की पिच काली मिट्टी से बनाई जाती है। ये पिच बल्लेबाजों के काफी मदद आती है और यहां काफी रन बनाते हैं। खेल की शुरुआत में यहां तेज गेंदबाजों को मदद मिलती है। वहीं मैच में बाद के समय स्पिनर्स के लिए भी पिच में काफी कुछ होता है। ईडन गार्डन्स की आउटफील्ड बहुत तेज है, जिससे बल्लेबाजों को ज्यादा रन बनाने के मौके मिलते हैं। वहीं ईडन गार्डन्स स्टेडियम के रिकॉर्ड्स की बात करें तो, इस मैदान पर टी20 में सबसे बड़ा स्कोर पाकिस्तान ने खड़ा किया। उन्होंने 2016 में बांग्लादेश के खिलाफ ईडन गार्डन्स में 201/5 का स्कोर खड़ा किया था। वहीं मैदान पर सबसे छोटा स्कोर 2016 में बांग्लादेश ने न्यूजीलैंड के खिलाफ बनाया था। इस मैदान पर टॉस अहम भूमिका निभाता है। वहीं पहली पारी का औसतन स्कोर 143 है। इस मैदान पर अब तक 11टी20 मैच खेले गए हैं। इनमें से पांच बार पहले बल्लेबाजी करने वाली और 6 बार चेज करने वाली टीम जीती है।

टीम इंडिया की जर्सी पर पाकिस्तान लिखा होगा?

नई दिल्ली (एजेंसी)। चैंपियंस ट्रॉफी 2025 के आगाज में अब बस कुछ ही दिन शेष हैं। इस टूर्नामेंट में भारत और पाकिस्तान के बीच के रिश्तों की खट्टास साफ नजर आ रही है। पहले भारत ने पाकिस्तान जाने से इनकार किया वहीं अब पाकिस्तानी मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार भारत अपनी जर्सी पर मेजबान टीम पाकिस्तान का नाम नहीं चाहता है। उन्होंने आईसीसी अधिकारी के हवाले से ये भी कहा कि ऐसा करने पर भारत पर एक्शन हो सकता है। मेजबान होने के नाते चैंपियंस ट्रॉफी 2025 के लोगो में पाकिस्तान का नाम मौजूद है। पाकिस्तानी मीडिया के मुताबिक बीसीसीआई को ये मंजूर नहीं है कि भारत पाकिस्तान के नाम वाली जर्सी पहनकर टूर्नामेंट खेले हैं। हालांकि, नियम उसके खिलाफ हैं। अगर वह लोगो जर्सी पर नहीं रखता है तो उन्हें सजा का सामना करना पड़ सकता है। वहीं पाकिस्तानी मीडिया ने आईसीसी के सूत्र के हवाले से लिखा कि, हर टीम की जिम्मेदारी है कि उनकी जर्सी पर टूर्नामेंट का लोगो हो। हर टीम के लिए ये नियम मानना जरूरी है। बता दें कि, आईसीसी के नियम के अनुसार

अगर कोई भी ऐसा करने में नाकाम रहता है तो उनपर सख्त एक्शन लिया जाएगा।

हालांकि, इसे लेकर अभी तक कोई भी अधिकारिक बयान सामने नहीं आया है। इसके अलावा मीडिया रिपोर्ट्स ने पीसीबी के एक अधिकारी के हवाले से लिखा कि, बीसीसीआई क्रिकेट में राजनीति को ला रहा है जो कि खेल के लिए ठीक नहीं है। बीसीसीआई ने अपनी टीम को पाकिस्तान भेजने से मना किया। वह अपने कप्तान को भी ओपनिंग सेरेमनी के लिए पाकिस्तान नहीं भेजेंगे और अब जो रिपोर्ट सामने आ रही है कि जर्सी पर पाकिस्तान प्रिंट नहीं होगा। हम क्रिकेट की सर्वोच्च संस्था आईसीसी से उम्मीद रखते हैं कि वह ऐसा नहीं होने देंगे और पाकिस्तान को समर्थन देंगे। फिलहाल, भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड ने टीम इंडिया को पाकिस्तान भेजने से इनकार किया था जिसके बाद चैंपियंस ट्रॉफी को हाइब्रिड मॉडल के तहत कराने पर फैसला हुआ था। भारत अपने सभी मैच दुबई में खेलेगा। वहीं अगर भारत फाइनल में पहुंचता है तो भी मुकाबला दुबई में खेला जाएगा।

रणजी ट्रॉफी में लंबे समय बाद दिखेगी सितारों की परेड

नई दिल्ली (एजेंसी)। रणजी ट्रॉफी का दूसरा चरण जब गुरुवार से शुरू होगा तो उसमें लंबे समय बाद रोहित शर्मा और ऋषभ पंत जैसे स्टार खिलाड़ी खेलते हुए नजर आएंगे। भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) ने ऑस्ट्रेलिया के निराशाजनक दौरे के बाद सख्त रवैया अपनाते हुए किसी भी खिलाड़ी के फिट होने की स्थिति में घरेलू क्रिकेट में खेलना अनिवार्य कर दिया है। यही वजह है कि शीर्ष खिलाड़ियों ने रणजी ट्रॉफी में खेलने के लिए खुद को उपलब्ध रखा है। इनमें भारतीय कप्तान रोहित भी शामिल हैं जो लगभग एक दशक के बाद मौजूदा चैंपियन मुंबई की तरफ से रणजी ट्रॉफी में खेलेंगे। पहली बार इस सत्र में रणजी ट्रॉफी को दो चरणों में आयोजित किया जा रहा है। इस बीच सीमित ओवरों की दो सबसे बड़ी प्रतियोगिताओं सैयद मुश्ताक अली टी20 ट्रॉफी और विजय हजारे ट्रॉफी एक दिवसीय टूर्नामेंट का आयोजन किया गया। रणजी ट्रॉफी के पहले चरण में सभी टीमों ने पांच-पांच मैच खेले थे।

दूसरे चरण में प्रत्येक टीम दो-दो मैच खेलेगी। इन मैच में केवल टीम ही नहीं बल्कि राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ियों के लिए भी काफी कुछ दांव पर लगा होगा जिन्हें न्यूजीलैंड के खिलाफ घरेलू श्रृंखला और फिर ऑस्ट्रेलिया में खराब प्रदर्शन के बाद स्पष्ट कह दिया गया कि वे घरेलू क्रिकेट को नजरअंदाज नहीं कर सकते हैं। स्टार बल्लेबाज विराट कोहली गर्दन में खिंचाव के कारण दिल्ली की तरफ से रणजी ट्रॉफी के अगले दौर में नहीं खेल पाएंगे लेकिन उन्होंने 30 जनवरी से शुरू होने वाले ग्रुप चरण के अंतिम दौर के मैच के लिए खुद को उपलब्ध रखा है।

रोहित हालांकि अजिंक्य रहाणे की कप्तानी में मुंबई की तरफ से खेलने के लिए तैयार हैं। मुंबई को अगले मैच में जम्मू कश्मीर की कड़ी चुनौती का सामना करना पड़ेगा जो अभी एलीट ग्रुप ए में दूसरे स्थान पर है। रोहित इस मैच में यशस्वी जायसवाल के साथ पारी का आगाज कर सकते हैं। इस ग्रुप में बड़ौदा अभी शीर्ष पर काबिज है और मुंबई को रिकॉर्ड 43वीं बार चैंपियन बनने की अपनी उम्मीद को कायम रखने के लिए अगले दो मैच में दमदार प्रदर्शन करना होगा।

भारत के टेस्ट और वनडे कप्तान रोहित पिछली दो श्रृंखलाओं में रन बनाने के लिए जूझते रहे और ऐसे में उनका फॉर्म में लौटना भारतीय टीम की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण होगा जिसे अगले महीने चैंपियंस ट्रॉफी में भाग लेना है। राजकोट में दिल्ली का सामना दो बार के विजेता सौराष्ट्र से होगा जिसमें ऋषभ पंत का सामना राष्ट्रीय टीम के अपने साथियों रविंद्र जडेजा और चेतेश्वर पुजारा से होगा। दोनों टीम के लिए ग्रुप डी के इस मैच में जीत हासिल करना बेहद जरूरी है। दिल्ली अभी चौथे जबकि सौराष्ट्र पांचवें स्थान पर है। तमिलनाडु और चंडीगढ़ इस ग्रुप में पहले दो स्थान पर हैं। प्रत्येक ग्रुप से शीर्ष पर रहने वाली दो टीम क्वार्टर फाइनल में जगह बनाएंगी।

पंजाब में ग्रुप सी में पांच मैच में अभी तक केवल एक जीत हासिल की है और वह पांचवें स्थान पर है लेकिन जब उसकी टीम बेंगलुरु के चिन्नास्वामी स्टेडियम में कर्नाटक का सामना करेगी तो सभी की निगाहें भारतीय वनडे टीम के उप कप्तान शुभमन गिल पर टिकी रहेंगी। पंजाब को इस मैच में अभिषेक शर्मा और अर्शदीप सिंह की कमी खलेगी जो इंग्लैंड के खिलाफ टी20 श्रृंखला के लिए राष्ट्रीय टीम में शामिल हैं। दूसरी तरफ कर्नाटक कोदेवदत्त पडिक्कल और प्रसिद्ध कृष्णा की वापसी सेमजबूती मिलेगी।

बंगाल को कल्याणी में हरियाणा के खिलाफ होने वाले मैच में तेज गेंदबाज आकाशदीप और बल्लेबाज अभिमन्यु ईश्वरन की सेवाएं नहीं मिल पाएंगी। यह दोनों खिलाड़ी चोटिल हैं। तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी भी राष्ट्रीय टीम का हिस्सा होने के कारण बंगाल की तरफ से नहीं खेल पाएंगे। रणजी ट्रॉफी में पिछले साल का उपविजेता और हाल में विजय हजारे ट्रॉफी के फाइनल में कर्नाटक से हारने वाला विदर्भ जयपुर में ग्रुप बी के मैच में राजस्थान का सामना करेगा। इस मैच में निगाहें विदर्भ के कप्तान करुण नायर पर टिकी रहेंगी जो इस समय बेहतरीन फॉर्म में चल रहे हैं।

टीम इंडिया की जर्सी और रोहित शर्मा के पाकिस्तान जाने पर बीसीसीआइ ने दिया बड़ा अपडेट

नई दिल्ली (एजेंसी)। चैंपियंस ट्रॉफी 2025 से पहले भारतीय टीम की जर्सी भारत के अलावा पाकिस्तान में भी काफी चर्चा में है। इसे लेकर कई खबरें सामने आ चुकी हैं। वहीं कहा गया कि टीम इंडिया की जर्सी पर चैंपियंस ट्रॉफी के लोगो के साथ पाकिस्तान नहीं लिखा होगा। लेकिन अब इस पर भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड यानी बीसीसीआई ने बड़ा अपडेट दिया है। साथ ही बीसीसीआई के नई सचिव देवजीत सैकिया ने रोहित शर्मा के पाकिस्तान जाने पर भी अपना बयान दिया है। दरअसल, बीसीसीआई के सचिव देवजीत सैकिया ने सभी अटकलें खारिज कर दी हैं। जिसमें बोर्ड ने टीम की आधिकारिक जर्सी पर मेजबान पाकिस्तान का नाम लिखने पर आपत्ति जताई है।

ओपनिंग सेरेमनी में कप्तान रोहित शर्मा जाएंगे या नहीं इसे लेकर भी देवजीत सैकिया ने अपना बयान दिया है। समाचार एजेंसी पीटीआई के अनुसार बीसीसीआई के सचिव देवजीत सैकिया ने कहा है कि रोहित वहां जाएंगे या नहीं इसे लेकर अभी कोई फैसला नहीं हुआ है। साथ ही उन्होंने कहा कि टीम इंडिया टूर्नामेंट के दौरान यूनिफॉर्म को लेकर आईसीसी के नियमों का पालन करेगी। वहीं बीसीसीआई सचिव के बयान के बाद टीम इंडिया की जर्सी पर आधिकारिक लोगो को लेकर लगातार उड़ रही अफवाहों पर विराम लग गया है।

फिलहाल, 19 फरवरी से शुरू हो रहे चैंपियंस ट्रॉफी 2025 को टीम इंडिया हाइब्रिड मॉडल के तहत दुबई में खेलेगी। जबकि अन्य 7 टीमें अपने सभी मैच पाकिस्तान में खेलेगी। वहीं भारतीय टीम का पहला मुकाबला 20 फरवरी को बांग्लादेश के खिलाफ होगा तो 23 जनवरी को टीम इंडिया अपने चिर प्रतिद्वंद्वी टीम पाकिस्तान के खिलाफ मुकाबला खेलेगी। इसके अलावा 2 मार्च को भारतीय टीम अपना आखिरी ग्रुप मैच न्यूजीलैंड के खिलाफ खेलने उतरेगी। अगर भारत टूर्नामेंट के फाइनल में पहुंचता है तो खिताबी मुकाबला दुबई में खेला जाएगा।

गेंदबाजों में जसप्रीत बुमराह की बादशाहत बरकरार

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईसीसी ने बुधवार को ताजा रैंकिंग जारी की है। इस रैंकिंग में भारत के प्रमुख तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह नंबर एक गेंदबाज बने हुए हैं। वहीं रविंद्र जडेजा ने ऑलराउंडर्स की श्रेणी में अपना टॉप स्थान बरकरार रखा है। बुमराह ने जनवरी में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पांचवें और अंतिम बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी से पहले 907 अंक हासिल किए थे और इतिहास रचा था। ये किसी भारतीय गेंदबाज द्वारा उच्चतम आईसीसी रैंकिंग रेटिंग है। फिलहाल, उनकी 908 रेटिंग है और जो कि उनकी सर्वश्रेष्ठ रेटिंग है। ऑस्ट्रेलिया के पैट कमिंस 841 रेटिंग अंकों के साथ टेस्ट गेंदबाजों में दूसरे और दक्षिण अफ्रीका के कगिसो रबाडा 837 रेटिंग अंकों के साथ गेंदबाजों में तीसरे स्थान पर हैं। ऑस्ट्रेलिया के जोश हेजलवुड चौथे और दक्षिण अफ्रीका के मार्को यानसेन पांचवें स्थान पर हैं। मुल्तान में वेस्टइंडीज के खिलाफ पहले टेस्ट में 6 विकेट लेने के बाद पाकिस्तान के नोमान अली (761) टॉप 10 में पहुंच गए हैं। वह दो स्थान की छलांग के साथ नौवें स्थान पर हैं। साथ ही टॉप 10 टेस्ट गेंदों में 10वें स्थान पर भारत के रविंद्र जडेजा हैं। टेस्ट फॉर्मेट में टॉप 10 ऑलराउंडर्स की सूची में ज्यादा बदलाव नहीं हुए हैं। जडेजा 400 रेटिंग अंकों के साथ टॉप स्थान पर बरकरार हैं। उनके बाद दक्षिण अफ्रीका के मार्को यानसेन हैं। उनका रेटिंग अंक 294 है। बांग्लादेश के

मेहदी हसन 284 रेटिंग अंकों के साथ तीसरे स्थान पर हैं। ऑस्ट्रेलिया के कप्तान पैट कमिंस 282 रेटिंग अंकों के साथ चौथे और बांग्लादेश के शाकिब अल हसन 263 रेटिंग अंकों के साथ ऑलराउंडरों में पांचवें नंबर पर हैं। वहीं टेस्ट बल्लेबाजों में टॉप स्थान पर इंग्लैंड के जो रूट हैं। उनके रेटिंग अंक 895 है। वहीं दूसरे स्थान पर 876 रेटिंग अंकों के साथ इंग्लैंड के ही हैरी ब्रूक हैं। तीसरे नंबर पर न्यूजीलैंड के केन विलियमसन हैं। उनके रेटिंग अंक 867 हैं। भारत के यशस्वी जायसवाल 847 रेटिंग अंकों के साथ चौथे स्थान पर हैं। जबकि ऑस्ट्रेलिया के ट्रेविस हेड 772 रेटिंग अंकों के साथ पांचवें स्थान पर हैं। टेस्ट बल्लेबाजों में टॉप 10 में भारत के दो खिलाड़ी हैं। यशस्वी जायसवाल के अलावा ऋषभ पंत हैं। पंत को एक स्थान का नुकसान हुआ है। वह 10वें स्थान पर लुढ़क गए हैं। खराब फॉर्म में चल रहे विराट कोहली 26वें, जबकि शुभमन गिल 22वें स्थान पर हैं। जबकि रोहित शर्मा टेस्ट बल्लेबाजों में 43वें स्थान पर हैं।

इंग्लैंड के खिलाफ मुकाबले से पहले मोहम्मद शमी ने उड़ाई पतंग

नई दिल्ली (एजेंसी)। टीम इंडिया तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी इंग्लैंड के खिलाफ खेली जाने वाली पांच मैचों की टी20 सीरीज के जरिए अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में वापसी के लिए पूरी तरह से तैयार हैं। वहीं सीरीज का पहला मैच आज यानी 22 जनवरी, बुधवार को शाम 7 बजे से खेला जाएगा। ये मैच कोलकाता के ईडन गार्डन्स में होगा। लेकिन अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में वापसी से पहले मोहम्मद शमी पतंग उड़ाते हुए नजर आए, जिसका वीडियो बीसीसीआई ने सोशल मीडिया के जरिए शेयर किया। वीडियो की शुरुआत पतंग और मांझे के साथ होती है। फिर मोहम्मद शमी कहते हैं, पतंग उड़ाए बहुत टाइम हो गया है। पतंग उड़ाए हुए तो करीब 15 साल के आसपास हो गया। क्योंकि जब घर से निकले, उसके बाद पतंग उड़ाने को मिली ही नहीं।

उसके बाद सिर्फ बॉल ही हाथ में आई है। साथ ही वीडियो में शमी ने बताया पतंग को अच्छी तरह से उड़ाना जानते हैं। फिर उन्होंने कहा कि पतंग का बैलेंस भी क्रिकेट लाइफ की तरह बनाना पड़ता है। अगर आप क्रीज पर सेट हुए तो रन बनाओगे और बॉलिंग में विकेट मिलेगा। रिदम जरूरी है। हर चीज को एक फ्लो होता है। बाते करते-करते शमी ने पंत को हवा में काफी ऊंचा कर दिया। शमी ने वीडियो में बॉलिंग और पतंग के बैलेंस पर बात करते हुए कहा कि, जो भी है, लेकिन बॉलिंग के हिसाब से आपकी बॉडी, फिटनेस, स्किल, आपका माइंडसेट ये सब चीजें बहुत जरूरी हैं। ऐसे ही पतंगा का भी बैलेंस होता है। शमी ने आगे कहा कि, देखो मांझा हो, बॉल हो या गाड़ी ड्राइविंग हो। अगर आप मजबूत हैं और खुद पर भरोसा है, तो मुझे नहीं लगता है कि आपको कुछ फर्क नजर आएगा। आपको किसी भी काम को करने के लिए कॉन्फिडेंस होना चाहिए। वापसी को लेकर शमी ने कहा कि, एक साल का इंतजार किया है और एक साल हार्ड वर्क किया है। भागने में भी डर सकता था कि क्या होने वाला है। किसी भी खिलाड़ी के लिए बहुत मुश्किल है उस फ्लो से इंजर्ड होकार दोबारा एनसीए जाकर रिहैब करना और वापस आना। आप इंजरी से ज्यादा मजबूत होकर आते हो, मुझे ये लगता है क्योंकि आपको कितनी बार वो चीजें दोहरानी पड़ती है और मानसिक तौर पर मजबूत होना पड़ता है।

अपनी ही सरकार को आईना दिखाने पद यात्रा पर सांसद

गणेश सिंह बोले- यहां सड़कें-नालियां टूटीं, 915 करोड़ का फंड कहां गया?

मीडिया ऑडीटर, मैहर (निप्र)। सतना में स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट की वास्तविकता जानने के लिए सांसद गणेश सिंह तीन दिन तक सभा 45 वार्डों की पदयात्रा पर हैं। पहले दिन बुधवार को 10 किलोमीटर की पदयात्रा में उन्होंने पाया कि केंद्र से मिले 915 करोड़ के फंड का सही उपयोग नहीं हुआ है। नगर निगम के दावों के अनुसार, कुल 72 प्रोजेक्ट्स में से 43 पूरे हो चुके हैं और 29 प्रगति पर हैं, लेकिन जमीनी हकीकत कुछ और ही बयान कर रही है।

सांसद बोले- सड़कें बदहाल, लोगों में गुस्सा: सांसद गणेश सिंह ने अभी तक की पदयात्रा के अनुभव बताते हुए कहा कि लोगों मे बहुत गुस्सा है। सड़कें बदहाल हैं। नालियां टूटी हैं। साल भर पहले सीवर लाइन की खुदाई में जिस जगह एक श्रमिक की मौत हो गई थी। आज भी वहां वही स्थित मिली। स्कूली बच्चों को भी आवागमन में समस्याएं आ रही हैं। स्कूल के वाहन उनके घरों तक नहीं पहुंच पा रहे।

लोगों ने सांसद को सुनाई परेशानियां: पदयात्रा में उन्हें पग पग पर नगर निगम के उलहने सुनने को मिले। लोग हाथ पकड़कर सांसद को साथ ले गए और सड़क, नाली, पानी की समस्याएं सुनाईं। सांसद स्वयं जिन सड़कों से हो कर गुजरे, वहां की बदहाली उन्होंने स्वयं महसूस की।

सीवर लाइन के काम से लोग परेशान: विशेष रूप से सीवर लाइन का काम शहर के लिए बड़ी समस्या बन गया है। निर्माण एजेंसी बिना किसी योजना या दिशा-निर्देश के मनमाने ढंग से खुदाई कर रही है। खुदे हुए गड्ढों को लंबे समय तक खुला छोड़ दिया जाता है, जिससे कई दुर्घटनाएं हो चुकी हैं। सबसे चिंताजनक बात यह है कि सीवर लाइन बिछाने के बाद सड़कों का उचित रेस्टोरेशन नहीं किया जा रहा है। निर्माण एजेंसी सिर्फ मिट्टी डालकर आगे बढ़ जाती है।

इस लापरवाही का नतीजा यह है कि बड़े वाहन लगातार इन गड्ढों में फंस रहे हैं और छोटे वाहन चालकों को आवागमन में भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। स्मार्ट सिटी के नाम पर शहर की स्थिति और भी खराब होती जा रही है।

रिपोर्ट कार्ड हो रहा तैयार: 3 दिनी सांसद की पदयात्रा में नगर निगम और नजूल के अधिकारी कर्मचारी साथ-साथ चल रहे हैं। इस दौरान जनता की बताई गई समस्याओं को डायरी में नोट करते जा रहे हैं। सांसद ने स्वयं यह कहा था कि पदयात्रा के दौरान जनता की गई शिकायतों का रिपोर्ट कार्ड तैयार किया जाएगा। इसके बाद नगर निगम प्रशासन और निर्माण एजेंसियों से वे खुद बात करेंगे।

पूर्व महापौर ने भी जताई नाराजगी: सांसद की पदयात्रा में कदम से कदम मिलाकर चल रही पूर्व महापौर ममता पांडेय ने भी शहर की दुर्दशा पर अपनी नाराजगी जताई। उन्होंने कहा कि सीवर लाइन प्रोजेक्ट की निर्माण एजेंसियों पर निगम के अधिकारियों का अंकुश ही नही है। जब जहां चाहा सड़कें खोद दी गईं। जबकि नियम है कि जितनी सड़क खोदी गईं हैं, उसे पहले दुरुस्त करना पड़ेगा। उसके बाद आगे का काम होना चाहिए।

सीवर लाइन की वजह से अभी 1 साल और समस्या: इधर जब महापौर योगेश ताम्रकार से सांसद की पदयात्रा के बारे में सवाल पूछे गए तो उन्होंने स्पष्ट कहा कि वे बड़े नेता हैं। और 20 साल से सांसद हैं। इस पदयात्रा के दौरान उन्हें जो शिकायतें मिलेंगी, उन्हें सुधरा जाएगा। महापौर ने कहा कि सीवर लाइन की वजह से अभी 1 साल और शहर की जनता को कष्ट उठाना पड़ेगा। उसके बाद शहर स्मार्ट हो जाएगा।

आदर्श गॉव के संकल्प में सम्मिलत होंगे समाज कार्य के छात्र

परामर्शदाताओं का दो दिवसीय प्रशिक्षण सम्पन्न

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। म.प्र. जन अभियान परिषद एवं महात्मां गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट के संयुक्त तत्वाधान में मुख्यमंत्री सामुदायिक नेतृत्व क्षमता विकास पाठयक्रम अंतर्गत परामर्शदाताओं का दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम 21 एवं 22 जनवरी 2025 को विन्ध्य चेम्बर्स ऑफ कामर्स एण्ड इण्डस्ट्रीज सतना में आयोजित किया गया। कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविदयालय के कुलगुरू डॉ. भरत मिश्रा उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. अमरजीत सिंह डायरेक्टर मुख्यमंत्री सामुदायिक नेतृत्व क्षमता विकास पाठयक्रम रहे। विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रो. नंदलाल मिश्रा डीन कला संकाय, प्रो. जयशंकर मिश्रा उप कुलसचिव महात्मां गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट, प्रोअजय आर चौरे, विभागाध्यक्ष समाजकार्य विभाग एवं म.प्र. जन अभियान परिषद संभाग रीवा के संभाग समन्वयक प्रवीण पाठक उपस्थित रहे।

प्रशिक्षण में सम्मलित सतना एवं मैहर जिले के सभी विकासखण्डों से सम्मलित परामर्शदाताओं को संबोधित करते हुये कुलगुरू प्रो. भरत मिश्र ने बताया कि मुख्यमंत्री सामुदायिक नेतृत्व क्षमता विकास कार्यक्रम मध्यप्रदेश शासन की अभिनव पहल हैं जिसके माध्यम से प्रदेश भर के युवाओं को शिक्षा के साथ नेतृत्व क्षमता विकसति करनें का कौशल भी मिलता हैं। आज पूरे प्रदेश के 313 विकासखण्डों में 50 हजार से अधिक छात्र प्रशिक्षित होकर शासन एवं सामाजिक संस्थाओं के साथ वालंटियर के रूप मे अपनी सहभागिता देकर प्रदेश के विकास में अपना मूल्यवान सहयोग प्रदान कर रहे हैं। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि हमारा विश्वविद्यालय नैक के मूल्यांकन में ए प्लस-प्लस ग्रेड प्राप्त किया है जो कि शिक्षा जगत में सर्वोच्च ग्रेड है। आयोजित प्रशिक्षण के शैक्षणिक सत्र में प्रो. अमरजीत सिंह द्वारा मुख्यमंत्री सामुदायिक नेतृत्व क्षमता विकास कार्यक्रम एवं सतत् विकास लक्ष्य, अवधारणा, उद्देश्य, राष्ट्रीय शिक्षा नीति के विविध प्रावधान, इंटर्नशिप एवं अन्य संबंधित आयाम रोलप्ले के माध्यम से अभ्यासके विषयों पर प्रकाश डालते हुए समस्त परामर्शदाताओं को जानकारी प्रदान की गई।

प्रो. जयशंकर मिश्रा, उपकुल सचिव द्वारा सीएमसीएलडीपी पाठ्यक्रम संचालन की मूल गतिविधियां एवं परामर्शदाता की भूमिका (पंजीयन, प्रवेश, वैकल्पिक एवं व्यावसायिक विषयों का चयन, मॉड्यूल्स की जानकारी, सामाजिक प्रयोगशाला के रूप में ग्राम का चयन, संपर्क कक्षा, प्रदत्त कार्य, प्रोजेक्ट एवं इंटर्नशिप, आंतरिक एवं बाह्य परीक्षा), छात्रों से अपेक्षाओं पर चर्चा की गई। प्रो. नंदलाल मिश्रा प्रोफेसर संपर्क कक्षा संचालन की पद्धति (व्याख्यान,विचार विमर्श, ब्रेन स्टॉर्मिंग, रोल-प्ले इत्यादि) संपर्क कक्षाओं को प्रभावी कैसे बनायें। जिला समन्वयक डॉ राजेश तिवारी द्वारा सहभागी अध्ययन पद्धति के संबंध में विस्तार से चर्चा करते हुये उसकी आवश्यकता, तकनीकि, आयोजन का स्वरूप, विभिन्न आयाम को विस्तार पूर्वक बताते हुये आदर्श ग्राम के निर्माण में उसकी भूमिका एवं औचित्य की जानकारी प्रदान की गयी। कार्यक्रम के अंत में प्रशिक्षणार्थियों का प्रस्तुतिकरण एवं जिज्ञासाओं का समाधान किया गया तथा अंत में मंचासीन अतिथियों के द्वारा सभी प्रतिभागी परामर्शदाताओं को प्रमाणपत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। आभार प्रदर्शन के उपरान्त कार्यक्रम का समापन हुआ।

दहेज प्रथा पर कथा व्यास माधवी का कड़ा प्रहार

श्रीराम विवाह कथा में कहा- समाज को इस कुप्रथा के खिलाफ आगे आना होगा

मीडिया ऑडीटर, चित्रकूट (निप्र)। चित्रकूट के कर्वी स्थित गुप्ता मैरिज लॉन में चल रही श्रीराम कथा के छठे दिन कथा व्यास माधवी ने समाज में बढ़ती दहेज प्रथा पर गंभीर चिंता व्यक्त की। उन्होंने श्रीराम सहित चारों भाइयों के विवाह प्रसंग का वर्णन करते हुए वर्तमान समय में दहेज के बढ़ते प्रभाव पर कटाक्ष किया। कथा में माधवी ने बताया कि अयोध्या में राम और उनके भाइयों की बारात के लौटने पर माता कौशल्या ने सभी बहुओं को बेटियों की तरह प्यार दिया। लेकिन कुबरी मंथरा ने कैकेयी की बुद्धि भ्रष्ट कर दी, जिससे उन्होंने राजा दशरथ से श्रीराम के लिए 14 वर्ष का वनवास और भरत के लिए राजगद्दी मांग ली।

कार्यक्रम में सदगुरु सेवा संघ ट्रस्ट के डायरेक्टर डॉ. बी.के. जैन, भाजपा जिलाध्यक्ष लवकुश चतुर्वेदी, पूर्व जिलाध्यक्ष चंद्र प्रकाश खरे, डीसीबी अध्यक्ष पंकज अग्रवाल और नगर पालिका अध्यक्ष नरेंद्र गुप्ता सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित रहे। कथा व्यास ने चित्रकूट की महिमा का वर्णन करते हुए महाकुंभ के अवसर पर हो रही इस कथा को शुभ संयोग बताया।

कार्यक्रम के आयोजक दवा व्यापारी अभिषेक पहारिया और दिव्या पहारिया ने कथा विश्राम के बाद आरती और प्रसाद वितरण किया। पायनियर्स क्लब के राष्ट्रीय अध्यक्ष केशव शिवहरे, बुंदेली सेना के जिलाध्यक्ष अजीत सिंह समेत बड़ी संख्या में श्रद्धालु मौजूद रहे।

महाकुंभ से लौट रहे दोस्तों की कार खाई में गिरी

एक की मौत, 3 घायल, गायों के झुंड से बचने की कोशिश में हुआ हादसा

मीडिया ऑडीटर, मैहर (निप्र)। मैहर में राष्ट्रीय राजमार्ग-30 पर मंगलवार रात एक हादसे में एक व्यक्ति की मौत हो गई। हादसा तब हुआ जब प्रयागराज महाकुंभ से लौट रहे पांच दोस्तों की कार सड़क पर अचानक आए गायों के झुंड से बचने के प्रयास में अनियंत्रित होकर 20 फीट गहरी खाई में गिर गई।

कार मालिक की मौत, चार दोस्त घायल: हादसे में कार मालिक राहुल उर्फ संजय कुशवाहा (30) की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि अन्य चार यात्री मामूली रूप से घायल हो गए। घायलों को हाईवे पेट्रोलिंग टीम और पुलिस ने सिविल अस्पताल, अमरपाटन में भर्ती कराया।अमरपाटन थाना प्रभारी केपी त्रिपाठी ने बताया कि मृतक राहुल कटनी जिले के कंधवारा का निवासी था। राहुल ने 15 दिन पहले ही सेकंड हैंड कार (एमपी 22 सीए 2911) खरीदी थी। यह हादसा उनकी महाकुंभ यात्रा से लौटते समय हुआ।

एम्बुलेंस ड्राइवर को घायलों की ड्रेसिंग करने की जिम्मेदारी

सोशल मीडिया पर सामने आया सतना सीएमएचओ का पत्र

मीडिया ऑडीटर, मैहर (निप्र)। सतना जिले में स्वास्थ्य विभाग की बड़ी लापरवाही सामने आई है। जिले के मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी (सीएमएचओ) द्वारा जारी एक विवादास्पद पत्र सोशल मीडिया पर वायरल हो गया है, जिसमें एम्बुलेंस चालक को मरीजों की ड्रेसिंग करने के निर्देश दिए गए हैं। सीएमएचओ ने बीएमओ कोठी को जारी किए पत्र में निर्देश दिया है कि सभी शासकीय एम्बुलेंस को तत्काल कार्यालय में खड़ा किया जाए और वाहन शाखा को सूचित किया जाए। पत्र में यह भी कहा गया है कि एम्बुलेंस चालक कामता प्रसाद कुशवाहा से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र कोठी में ड्रेसिंग का कार्य कराया जाए। साथ ही आवश्यकता पड़ने पर फोन पर सूचना मिलते ही चालक को सीएमएचओ कार्यालय में उपस्थित होने के निर्देश दिए गए हैं।

सीएमएचओ बोले- लिपिकीय त्रुटि से हुआ ऐसा: 7 जनवरी को जारी किया गया यह पत्र बुधवार को सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद विवाद का विषय बन गया। मामले की गंभीरता को देखते हुए सीएमएचओ डॉक्टर एल.के. तिवारी ने स्पष्टीकरण दिया है कि ऐसा लिपिकीय त्रुटि के कारण हुआ है। उन्होंने बताया कि संबंधित लिपिक को इस मामले में नोटिस जारी किया जा रहा है।

कामदगिरि महा आरती की वर्षगांठ बंदर-गाय के लिए अलग भंडारा

राम-लक्ष्मण-जानकी की झांकी निकली, भक्तों ने की पंचकोशी परिक्रमा

मीडिया ऑडीटर, चित्रकूट (निप्र)। चित्रकूट के कामदगिरि पर्वत पर महा आरती की पहली वर्षगांठ धूमधाम से मनाई गई। यह महा आरती पिछले साल उसी दिन शुरू की गई थी, जिस दिन अयोध्या में रामलला विराजमान हुए थे। विपिन विराट महाराज द्वारा शुरू की गई इस आरती की वर्षगांठ पर भक्तों की भारी भीड़ जुटी। कार्यक्रम में भव्य झांकी का आयोजन किया गया, जिसमें राम, लक्ष्मण, जानकी और हनुमान की मनमोहक प्रस्तुति के साथ हाथी-घोड़ों का विशेष जुलूस निकला। इसके बाद भक्तों ने भगवान कामदगिरि की पंचकोशी परिक्रमा भी की।

आयोजन की सबसे खास बात रही तीन प्रकार के भंडारे की व्यवस्था। बंदरों के लिए फलों का, गौमाता के लिए हरे चारे का और श्रद्धालुओं के लिए प्रसाद का विशेष प्रबंध किया गया। इस पावन अवसर पर चित्रकूट के सीएमओ भूपेंद्र द्विवेदी और बांदा जिला सहकारी बैंक के अध्यक्ष पंकज अग्रवाल सहित हजारों भक्तों ने हिस्सा लिया। समग्र आयोजन में भक्तों का अद्भुत उत्साह देखने को मिला। महा आरती और भंडारे ने कामदगिरि की इस पवित्र भूमि को एक बार फिर भक्ति और श्रद्धा के रंग में रंग दिया।

राष्ट्रीय मतदाता दिवस की शपथ अब 24 जनवरी को होगी

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। मंत्रालय स्थित सरदार वल्लभ भाई पटेल पार्क में 15 वें राष्ट्रीय मतदाता दिवस की शपथ 24 जनवरी 2025 को प्रातः 11 बजे दिलायी जायेगी। पूर्व में यह शपथ 25 जनवरी को होना थी किंतु 25 जनवरी को शासकीय अवकाश होने से यह परिवर्तित की गयी हैं। इसमें देश की लोकतांत्रिक परम्पराओं की मर्यादा को बनाए रखने तथा स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण निर्वाचन की गरिमा को अक्षुण्ण रखते हुए, निर्भीक होकर, धर्म,वर्ग, जाति, समुदाय, भाषा अथवा अन्य किसी भी प्रलोभन से प्रभावित हुए बिना सभी निर्वाचनों में अपने मताधिकार का प्रयोग करने की शपथ ली जायेगी। सामान्य प्रशासन विभाग ने अधिकारी-कर्मचारियों के साथ नागरिकों को जिलों में शपथ दिलाने के लिए प्रदेश के सभी संभागीय आयुक्त, कलेक्टर एवं मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत को निर्देश जारी किये हैं।

सीएम हेल्पलाइन की शिकायत नाट-अटेण्ड रहने पर कटेगी वेतन : कलेक्टर मैहर

समय-सीमा प्रकरणों की समीक्षा बैठक

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। कलेक्टर मैहर रानी बाटड ने कहा कि सीएम हेल्पलाइन की कोई भी शिकायत नाट-अटेण्ड रहने पर और निम्न गुणवत्तापूर्ण जबाब अंकित होने की स्थिति में संबंधित अधिकारी का वेतन कटेगा। बुधवार को कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में समय-सीमा प्रकरणों की संपन्न बैठक में कलेक्टर ने सीएम हेल्पलाइन के प्रकरणों की समीक्षा की। इस मौके पर अपर कलेक्टर शैलेन्द्र सिंह, एसडीएम विकास सिंह, डॉ. आरती सिंह, कार्यपालन यंत्री लोक निर्माण बीआर सिंह, पीएचई शरद सिंह, आरईएस अश्विनी जायसवाल, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. एलके तिवारी, एसडीओ फारेस्ट यशपाल मेहरा, सीईओ जनपद एमएल प्रजापति, प्रतिपाल बागरी, जिला शिक्षा अधिकारी टीपी सिंह, डीपीसी विष्णु त्रिपाठी सहित विकासखण्ड अधिकारी उपस्थित थे।

सीएम हेल्पलाइन की समीक्षा में कलेक्टर रानी बाटड ने कहा कि विभाग प्रमुख अधिकारी सीएम हेल्पलाइन के ग्रेडिंग के निर्देशों को भली-भांति अध्ययन कर लें। निराकरण की कार्यवाही सतत रूप से प्रतिदिन करें। प्रत्येक अधिकारी प्रतिदिन अपनी सीएम हेल्पलाइन शिकायतों को देखे और संतुष्टिपूर्ण निराकरण का प्रयास करें। विभाग के जिला अधिकारी की निगलीजेंसी की वजह से ग्रेडिंग में नम्बर कम हो रहे हैं। शिकायतों के नाट-अटेण्ड रहने और निम्न गुणवत्ता के जबाब दर्ज किये जाने पर भी वेतन कटौती की कार्यवाही होगी। अब जिला अधिकारी पर भी जबाबदारी निर्धारित की जायेगी। ग्रेडिंग के समय ऐन वक्त पर निचली श्रेणी से बाहर आने के प्रयास की नौबत नहीं आनी चाहिए। उन्होंने कहा कि सभी विभाग ए ग्रेड में रहे, ग्रेडिंग में बी और सी श्रेणी में आये विभागों के लिए अप्रसन्नता व्यक्त की। कलेक्टर ने कहा कि निम्न गुणवत्तापूर्ण जबाब एल थ्री में पहुंचने पर उसे वापस कर गुणवत्तापूर्ण निराकरण कराये। सीएम हेल्पलाइन में सभी अधिकारी स्वतः संज्ञान लेकर जिम्मेदारी पूर्वक कार्य करें।

कलेक्टर ने कहा कि निराकरण के जबाब गुणवत्तापूर्ण और उचित होने चाहिए, भविष्यात्मक निराकरण के जबाब पोर्टल में नहीं डाले जाये। कलेक्टर ने जनवरी 2024 के पूर्व की लंबित शिकायतें, 50 दिन से अधिक की शिकायत और चालू माह की शिकायतों के निराकरण की समीक्षा की। चालू माह की शिकायतों की समीक्षा में कलेक्टर ने कहा कि दिसम्बर 23 तक की सभी शिकायतें डिस्पोज करें। जनवरी माह की अब तक 2053 कुल शिकायत मिली है। इतनी ही और मिलने की संभावना है। इन्हें नियमित रूप से देखे और निराकृत करें। सीएम हेल्पलाइन में स्वास्थ्य विभाग द्वारा मैहर और सतना जिले में बेहतर कार्य की बदौलत ए ग्रेड में रहने तथा मैहर जिले की शिकायतों का निराकृत प्रतिशत 81.15 प्रतिशत आने पर कलेक्टर रानी बाटड ने सीएमएचओ डॉ. एलके तिवारी की सराहना की। उन्होंने कहा कि अन्य विभाग भी इन प्रयासों का अनुसरण करें तथा ए ग्रेड में आने का प्रयास करें।

कलेक्टर रानी बाटड ने कहा कि 25 जनवरी को सभी मतदान केन्द्रों पर राष्ट्रीय मतदाता दिवस का आयोजन होगा। जिला स्तर पर एकलव्य आवासीय विद्यालय मैहर के कार्यक्रम में निबंध, वाद-विवाद, क्विज प्रतियोगिता के सफल प्रतिभागी और बीएलओ को भी प्रशस्ति पत्र दिये जायेंगे। गणतंत्र दिवस समारोह की फाइनज फुल्ल ड्रेस रिर्हसल 24 जनवरी को प्रातः 9 बजे से होगी। सभी अधिकारी-कर्मचारी समय पर उपस्थित रहेंगे। इसके अलावा 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस और भारत पर्व के आयोजन में अनिवार्य रूप से उपस्थित रहेंगे। कलेक्टर ने कहा कि गणतंत्र दिवस पर अच्छे कार्य के लिए पुरूस्कृत होने वाले शासकीय अधिकारी-कर्मचारियों के नामांकन प्रस्ताव आज शाम तक जमाकर दें। भारत पर्व का आयोजन सरस्वती विद्यालय मैहर में पूर्व वर्ष की भांति किया जायेगा। कलेक्टर ने जनसुनवाई के आवेदनों में की गई कार्यवाही और जबाब कलेक्ट्रेट को प्रस्तुत करने और सीएम मानिट, राज्य शासन मंत्रालय के पत्र, जनप्रतिनिधियों आयोग के प्राप्त पत्रों में त्वरित कार्यवाही कर जबाब प्रेषित करने के निर्देश भी दिये।

प्रिज़्म जॉनसन लिमिटेड की वार्षिक रिटेलर्स मीट का किया गया आयोजन

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। प्रिज़्म जॉनसन लिमिटेड द्वारा विजय विलाश होटल रीवा में वार्षिक रिटेलर्स मीट का आयोजन किया गया, जिसमें रीवा के सभी रिटेलर्स को आमंत्रित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत द्वीप प्रज्वलन कर की गई। कार्यक्रम कि अध्यक्षता कर रहे प्रिज़्म जॉनसन लिमिटेड के जोनल सेल्स हेड हितेन्द्र मिश्रा ने प्रिज़्म जॉनसन ग्रुप एवं कंपनी की पॉलिसी के बारे में बताया कि रिटेलर बीमा पॉलिसी, अधिकृत खुदरा विक्रेता त्रैमासिक नकद योजना, अनमोल रिश्ते मासिक अंक योजना, त्रैमासिक उत्पाद वाउचर योजना, कवरब्लॉक और एडब्लूसी डयूराटेक सीमेंट की गुणवत्ता पर प्रकाश डाला। तत्पश्चात कंपनी के रीजनल सेल्स हेड रियाज अहमद ने कार्यक्रम में आए डीलर, रिटेलर्स बंधुओं का स्वागत अभिनंदन किया और सभी डीलर रिटेलर बंधुओं को यह विश्वास दिलाया कि हम आपके परिवार के लिए इंश्योरेंस योजना भी लाए है। जिससे हम आपके व्यवसाय के साथ-साथ आपके परिवार का भी ध्यान दिया जा सके। कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए कंपनी के जोनल टेक्निकल हेड अक्षुण राज ने कंपनी के सभी ब्रांड प्रिज़्म चैंपियन, प्रिज़्म चैंपियन प्लस, प्रिज़्म चैंपियन डयूराटेक एवं प्रिज़्म चैंपियन ऑल वेदर के बारे में बताया। इसके साथ ही सभी को संबोधित करते हुए विश्वास दिलाया कि हम आपके साथ हमेशा कदम से कदम मिला कर चलेंगे। इसके साथ ही हमारी तकनीकी टीम भी बेहतरीन सर्विस दे रही है। आयोजित कार्यक्रम में कंपनी के मास्टर कोच नीरज मिश्रा, ब्रांच मैनेजर अजय सिंह, सेल्स प्रमोटर वीरेन्द्र सिंह एवं रीवा के सेल्स और टेक्निकल टीम के लोग उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अगली कड़ी में प्रिज़्म सीमेंट के सभी रिटेलर्स को उनके द्वारा किये गये उत्कृट कार्यों कि सराहना करते हुए ट्राफी के साथ सम्मानित किया गया। उपरोक्त आशय की जानकारी कंपनी के एजीएम सीएसआर एवं जनसंपर्क अधिकारी देवेन्द्र मिश्रा ने दी।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया प्रकाशन रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय प्रभात बिहार कॉलोनी सतना से प्रकाशित, संपादक संदीप द्विवेदी आर.एन.आई नं.एमपीएचआईएन/2021/81683
प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9407132714, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार, सभी विवादो का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।